।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

मई 2025

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

वर्ष : 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक : 02

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क : 2100 रुपये मात्र मूल्य : 20 रुपये

सुरभि उवाच

हे मेरे प्यारे पुत्रों ! आप सभी को मेरा बहुत–बहुत शुभ आशीर्वाद!

आप सभी का सदा ही मंगल हो ! मुझे अपार हर्ष है कि आप जैसे मेरे सुपुत्रों की मैं मां हूँ। बेटा आपने सुना और पढ़ा ही है कि भगवान श्री कृष्ण स्वयं बचपन से ही मेरे भक्त रहे हैं। उन्हें गोएं कितनी प्रिय थी। गोसेवा शुद्ध ईश्वरीय कार्य है।

बेटा! भगवान की प्रसन्नता के हजारों उपाय शास्त्रों में बताये गये हैं, पर आज मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि भगवान को प्रसन्न करने का सबसे सरल और सबसे तेज उपाय है गोसेवा। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य गोभक्त में ये सब गोसेवा से आ जाते हैं। मेरे भक्त को ये सब प्राप्त करने के लिये अलग से कुछ करने की जरूरत भी नहीं है। गोभक्त को भगवान की खोज नहीं करनी पड़ती है। भगवान स्वयं खोजते हुए गोभक्त के पास आते हैं, उसे गले लगाते हैं।

पर बेटा ! सेवा को सेवा के भाव से करना होगा। सेवा का निरन्तर पोषण जरूरी है। जिस प्रकार बीज को उगाने के बाद नियमित और निरन्तर पोषण से ही उसे वृक्ष में बदला जा सकता है, ठीक उसी प्रकार आप द्वारा प्रारम्भ की गई गोसेवा की सफलता के लिये नियमितता व निरन्तरता बहुत आवश्यक है। जिस प्रकार आप इस शरीर को बनाये रखने के लिये नियमित उसका पोषण करते हैं, अपनी रोजी–रोटी के लिये नियमित प्रयास करते रहते हैं ठीक उसी प्रकार गोसेवा में भी नियमितता आवश्यक है। अपनी दिनचर्या में गोसेवा सम्मिलित होना जरूरी है। गोसेवा से कम महत्व के कार्य भी कई हैं जो आपकी दिनचर्या में जुड़े हुए हैं, गोसेवा जैसा इतना महत्वपूर्ण कार्य हमारी दिनचर्या में सम्मिलित करने में हमें कतई हिचक नहीं होनी चाहिये।

हे मेरे प्यारे पुत्रों ! मुझे आपसे पूर्ण उम्मीद है कि आज से आप इस ईश्वरीय कार्य को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर मुझे आपकी माता होने का गौरव प्रदान करेंगे।

आपकी
अपनी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक:2

वैशाख मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शा: 1947 मई–2025

१. **श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद** - परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज 04

२. **भगवत प्राप्ति में बाधक चार दोष-** पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 09

३. **गीता ज्ञान** -पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज 13

४. **सत्संग की अनमोल बातें** - पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 17

५. **युवाओं के साथ मन की बात** – पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 20

६. **गोकृपा कथा** - पू. ग्वालसंत स्वामी श्री गोपालानंद सरस्वती जी महाराज 23

७. **श्री भक्तमाल कथा** - पू. ब्रह्मचारी श्री मुकुन्द प्रकाश जी महाराज 26

८. **श्री मद्भागवत कथा** – गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज 28

९. **दया धर्म का मूल है** - सम्पादक, अम्बा लाल सुथार 31

१०. **संस्था समाचार** - अप्रैल माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 33

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

eY;&20 #i;

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

स्वतंत्र भारत के शासकों का गाय के साथ व्यवहार

(श्री गोनवरात्री महामहोत्सव 2014)

सर्वेश्वर सच्चिदानंद परमात्मा अंतर्यामी रूप से सबके हृदय में विराजमान है उनका पावन स्मरण करते हैं, पूज्या गोमाता और उसके अखिल गोवंश की वंदना करते हैं। भारतीय गो कल्याण महामहोत्सव के गोनवरात्र महा अनुष्ठान में गर्ग संहिता के दिव्य सत्संग सत्र के तीसरे दिन मंच पर विराजे हुए पूज्य श्री व्यास जी, इस सम्पूर्ण आयोजन के आयोजक पूज्य श्री गोलोक पीठाधीयवर जी, आज के इस कार्यक्रम के अति विशिष्ट और मुख्य अतिथि पूज्य श्री डॉक्टर प्रणव पंड्या जी, हमारी इस गोसेवा सभा के परम अध्यक्ष पूज्य श्री गोविंददेवगिरी जी महाराज, गोसेवा के इस अभियान को भारत से बाहर सनातन प्रेमियों के अतिरिक्त धर्मावलम्बियों तक पहुंचाने का प्रयास करने वाले पूज्य परमहंस श्री प्रज्ञानानंदजी महाराज हरिहरानंद गुरुकुलम् जगन्नाथपुरी, श्री ब्रह्मधाम आसोतरा के उत्तराधिकारी पूज्य श्री धनाराम जी महाराज, राजस्थान गोसेवा समिति के अध्यक्ष और श्री बुद्धगिरी मठ के महंत पूज्य श्री दिनेश गिरी जी महाराज, गीताप्रेस में सनातन धर्म के ग्रंथों का बहुत ही स्वस्थ शब्द और परिमार्जित अनुवाद करने वाले, विशेष करके श्रीमद्भागवत जी को जो हम पढ़ते हैं उसका सारा अनुवाद अपने पूर्वाश्रम में करने वाले और पश्चात देश भर में भागवत और वेदांत के मूर्धन्य विद्वान धर्मनिष्ठ श्रौत्य पूज्य श्री स्वामी अखण्डानंद जी महाराज के कृपापात्र पौत्रशिष्य पूज्य श्री श्रवणानंदजी महाराज पहली बार इस बार पधारे और पधारते ही इन्होंने संकल्प किया कि मैं पूरा जीवन इस गोसेवा महाअभियान को समर्पित करूंगा, हमारे बीच श्री रघुनाथ भारती जी महाराज जो कैलाश आश्रम में पढ़कर आए हैं बहुत ही अच्छा इनका वेदांत और व्याकरण का ज्ञान है, शरीर में अत्यंत कृष है, पहले तो हमको ही लोग थका हुआ दुबला पतला कहते थे और इनके आने के बाद हमारा नंबर पीछे चला गया, ऐसे हमारे रघुनाथभारती जी महाराज, राजस्थान और ब्रज में सभी जगहों गोसेवा की अद्‌भुत प्रेरणा देने वाले और निरंतर गोसेवा भगवत सेवा का मन में मनोरथ संजोये हुए सबसे अधिक वयोवृद और भगवान के मनोरथों के रस के रसिक पूज्य श्री सागरिया बाबा बहुत लंबे समय से ब्रज में कोई सैकड़ों गोशालाएं इनके द्वारा स्थापित हुई, गोसेवा का मनोरथ ये रखते हैं, गोओं के लिए कभी हरा चारा, कभी लड्‌डू कभी फल, कभी तरबूज जब जैसा मौसम हो, वे किसी गोशाला में चले जाते हैं, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और गोमाता की बहुत अच्छी सेवा करते हैं।

हमारे गोलोक पीठाधीश्वरजी के कृपापात्र श्री बृज बिहारी शरण जी, आप सब भारतवासियों को और भारत से बाहर रहने वाले सनातन धर्म प्रेमियों को गर्ग संहिता की कथा के प्रेमियों को, गो प्रेमियों को आंग्ला भाषा में तीन दिनों से सत्संग सुना रहे हैं उनको और इस आयोजन के पीछे जो हमारी सत्संग मंडली है, संत मंडली है, ग्वाल मंडली है उन पूरी मंडली के अध्यक्ष श्री राधाकृष्ण जी महाराज, उनके साथी हमारे यहाँ के सभी युवा संतगण, पूज्य श्री नागा बाबा धर्मगिरि जी महाराज, धर्मगिरि नागा बाबा ऐसे एक संत है जो उन अखाड़ों में जहां पर व्यसन आदि होते थे वहां उन सबको बंद कर रहे हैं, आप हम तो समाज में व्यसन बंद करा रहे हैं पर नागा बाबा तो उन साधुओं में जो किसी की नहीं सुनते

उनको भी व्यसन बंद करा रहे हैं ऐसे पूज्य श्री धर्म गिरी जी महाराज और सामने जो संत विराजे हैं उन सबके हम नाम लेने जाएंगे तो शायद हमारा पूरा समय उसी में ले लेंगे पर ऐसे एक से एक धुरंधर संत हैं, एक से एक महान हैं, भारतमाता मंदिर के संस्थापक श्रद्धेय स्वामी श्री सत्यमित्रानंद गिरी जी महाराज बहुत ही सुंदर शब्दों में इस बात को कहते थे कि भाई जिन-जिन का नाम लिया वे तो यहाँ मुख पर हैं और जिनका नाम नहीं लिया वे सब यहाँ हृदय में विराजमान हैं।

श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज की सेवा में रहने वाले त्यागमूर्ति श्री नारायणदास जी महाराज हमारे सामने एक छोटे से मेले कुचेले वस्त्रों में विराजे हैं, हालांकि उनका भाव है कि कोई उनका परिचय नहीं करावें पर हमने करवा दिया है, आपके सामने और भी कई बड़ी-बड़ी त्याग मूर्तियों विराजी हुई हैं और ऐसे मंगलमय अवसर पर गर्ग संहिता के सत्संग सत्र में गो नवरात्रि के दिव्य अनुष्ठान के इस काल में ऐसी-ऐसी महान विभूतियों के बीच में पूज्य श्री डॉ प्रणव पण्डया जी ने जो पवित्र संकल्प हम सब लोगों को श्रवण कराया है उसे हमारा हृदय प्रफुल्लित है। हम जो आपसे अपेक्षा रखते थे उससे भी अधिक आपने हमें संतुष्ट किया है और इतना ही नहीं हम यह समझते हैं कि संतुष्ट नहीं किया आप हृदय से इस कार्य को कराना चाह रहे हैं।

आपके साथ में गुरुदेव द्वारा खड़ा किया हुआ एक ऐसा संगठन है जिसके माध्यम से देशभर में इस कार्य को कर सकते हैं। प्रतिदिन भोजन से पूर्व गोग्रास निकालने की परंपरा बहुत ही वृहद स्तर पर गायत्री परिवार की ओर से प्रारंभ हो सकती है। दूसरे संत भी मंच से कहते हैं कि रुपया निकालो प्रतिदिन गोग्रास के लिए और हर मंच पर कहते हैं। श्री गोध ााम महातीर्थ पथमेड़ा यह तो आपका है ही पर इसको पूर्ण रूप से आपको अपनाना है। यह अलग कोई संस्था है ऐसा आप कभी ना समझें, यह आपकी अपनी संस्था है। गायत्री और गाय को हम अलग नहीं कर सकते हैं। भागवती गायत्री हमारी मति है, मति प्रदान करने वाली है।

एक बहुत सुंदर सूत्र हम लोगों ने कुछ समय पहले सुना था। भगवत कृपा से आया था, स्वामी सत्यमित्रानंद जी, स्वामी गोविंद गिरी जी महाराज और हम लोग सूरत में थे, सूरत में गोसेवा सप्ताह का आयोजन था। तो शाम का समय था, स्वामीजी बोले कि ये दो सूत्र अपने सब पर लगा दीजिए। क्या ? बोले कि- गाय बिना गति नहीं, वेद बिना मति नहीं। गाय बिना गति नहीं, वेद बिना मति नहीं का सीधा अर्थ है कि गाय के बिना हम चल नहीं सकेंगे, गाय के बिना हमारी सृष्टि स्वस्थ नहीं रह सकेगी, उसका प्रवाह निर्बाध गति से नहीं चल पायेगा और वेद के बिना चलने की मति, समझ हमें प्राप्त नहीं होगी।

गायत्री वेदों की मां है। जब गायत्री कहते हैं तो संपूर्ण वेद आ जाते हैं। गायत्री से कोई वेद बाहर नहीं है। यह तो हमारी बुद्धि जैसे-जैसे मोटी हुई है, ऐसे-ऐसे वेदों का विस्तार हो रहा है, अन्यथा प्रणव ही वेद था और जब प्रणव को नहीं समझ पाए तो फिर गायत्री के रूप में विस्तार हुआ और उसको नहीं समझ पाए तो फिर ऋग्वेद हुए और फिर युजुर्वेद हुए, चारों वेद हुए, पुराण हुए और उसके बाद अनेक आचार्य हुए उनको समझाने के लिए। जैसे-जैसे मनुष्य की बुद्धि मोटी होती गई वैसे-वैसे उनको समझाने के लिए विस्तृत प्रयास करना पड़ा और जब उसकी बुद्धि शुद्ध थी, सात्विक थी, तीक्ष्ण थी तब वह केवल एक अक्षर से सब कुछ समझ लेता था।

'दुर्भाग्य है देश का' यह शब्द सब जगह हम सुनते और कहते हैं पर काल अपना काम करता है, समय जो है वह अपना काम करता है। कई समय को बदलने की शक्ति रखते हैं वह ईश्वर की कृपा से ही रखते हैं। कोई व्यक्ति के अहम से नहीं हो सकती। जैसे वशिष्ठ जी ने जहाँ द्वापर आना था वहाँ त्रेतायुग ले आये। ऐसे महापुरुष एक ऐसा वातावरण स्थापित

करते हैं समाज में और देश में जिससे युग का परिवर्तन प्रत्यक्ष दिखता है और आज हम देख रहे हैं कि देश में सभी अपने-अपने स्थान पर बहुत उत्तम प्रयास कर रहे हैं, उपासना के सांगठनिक प्रयास नहीं हुए जो जिसकी इच्छा हो वह अपने-अपने ढंग से उपासना कर रहे हैं, राजनीतिक रूप से, सामाजिक आर्थिक रूप से तो सांगठनिक प्रयास हुए पर उपासना की दृष्टि से 20 वी शताब्दी में उपासना के लिए सांगठनिक प्रयास का एक सूत्रपात पूज्य श्री अचार्य श्री श्रीराम शर्मा जी ने शुरू किया और उनके उसे तप और त्याग का, उनके पुरुषार्थ का ही परिणाम है कि आज आप कह रहे हैं कि 10 करोड़ परिजन गायत्री परिवार से जुड़े हुए हैं, यह बहुत बड़ी बात है।

10 करोड़ परिजन क्या नहीं कर सकते, सब कुछ कर सकते हैं, इधर से उधर इशारे से हो सकता है, इतनी शक्ति भगवान ने आपको डॉक्टर साहब दी है और उसका पूरा का पूरा सदुपयोग कर रहे हैं। शक्ति तो दोनों तरह के लोगों को मिलती है। रावण को भी वो ही शक्ति मिलती है और आचार्य शंकर को भी वो ही शक्ति मिलती है। बुद्ध को भी वो ही शक्ति मिलती है और दुर्योधन को भी वो ही शक्ति मिलती है। दुर्योधन उसका उस तरह से उपयोग करता है, वो राक्षस माना जाता है और बुद्ध उसका उपयोग सेवा में, त्याग में, समाज के हित में करते हैं तो वे भगवान के अवतार माने जाते हैं। रावण उसका उपयोग अपने अहम की पुष्टि में और अपने विषयों के, इंद्रियों के संकल्प के भोग में करता है तो वह राक्षस है और भगवान शंकराचार्यजी इसका उपयोग धर्म की स्थापना के लिये, समाज के उद्धार में करते हैं तो वे शंकर जी के अवतार है। इस तरह से आप महान शक्ति प्राप्त हैं और उसका सदुपयोग कर रहे हैं। लेकिन एक बात हमको समझना अनिवार्य है कि यद्यपि वैदिक काल में भी ये बातें आती हैं कि जिससे ऐसा लगता है कि मांसभक्षी लोग उस काल में भी रहे होंगे, हर काल, हर युग में हर प्रकार के प्राणी रहे होंगे, पर मजहब के नाम पर, धर्म के नाम पर, उपासना के नाम पर और उसके बाद और नीचे उतरते उतरते अहंकार के नाम पर, अहंकार से भी नीचे उतरे तो रुपयों के कारण गोहत्या हुई हो ऐसा कभी नहीं हुआ, कभी भी नहीं हुआ। मुगलों के, तुर्कों के, पठानों के काल में उनके ईर्ष्या, अहंकार और अपनी उपासना के भेद और यहाँ के लोगों की उपासना को, उपासकों को दुःख पहुंचाने के लिए इस तरह का कुकर्म यदाकदा कहीं-कहीं होता था कहीं-कहीं होता था, पर उनके उस काल में भी गोहत्या पर भारत में प्रतिबंध लगा इतिहास इसका साक्षी है।

उसके बाद अंग्रेजों का, पुर्तगालियों का काल आया उस काल में गोहत्या धन के कारण होनी शुरू हुई यद्यपि उस समय ऐसा कहा जाता है कि अंग्रेजों की फौज को गोमांस की आवश्यकता थी इसलिए भारत में यांत्रिक कत्लखाने स्थापित करके 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बड़े पैमाने पर गोवध प्रारंभ किया, पर इसके पीछे यह भी कारण हो सकता है कि भारत की आर्थिक बौद्धिक और आध्यात्मिक समृद्धि का आधार गाय हैं यह उन लोगों के समझ में आ गया हो और वह इस देश को अपना शासित बनाना चाहते हो। किसी को भी अपने अधीन करना है तो उसे कमजोर करना होगा, उसे अपने आश्रित करने के लिए, आश्रित होने के लिए विवश करना होगा ऐसी कूटनीति होती है असुरों की। उस नीति के अनुसार भारत को बौद्धिक, आध्यात्मिक और आर्थिक दृष्टि से कमजोर करने के लिए गोवंश का संहार हुआ ऐसा भी कहा जा सकता है, पर उससे भारतीय बहुत पीड़ित हुए, बहुत आहत हुए और यह जो 1857 वाला गोरक्षा वाला आंदोलन एक दिन में ही नहीं हुआ, केवल मंगल पांडे के इनकार करने से प्रारंभ नहीं हुआ, यह पिछले 60 सालों से खुचर-पुचर, खुचर-पुचर पूरे देश में हो रहा था। 18 वीं शताब्दी के अंत में यह पता लग गया था कि ये अंग्रेज हमारी श्रद्धा और आस्था का आधार गाय और उसके वंश

का विनाश कर रहे हैं इसलिए अब इसे हमें असहयोग करना होगा। उस समय असहयोग की बात तो बहुत पीछे आई, उस समय तो संघर्ष की बात आई।

यह जो झांसी की रानी का युद्ध है यह राज्य के लिए नहीं लड़ा गया यह गाय के लिए लड़ा गया था, इस बात को छुपाया जारहा है। यहाँ जो महाराजश्री विराज रहे हैं, वहां के इतिहास को अच्छी तरह से जानते हैं। उनका राज्य तो पहले ही अंग्रेजों के आश्रित हो गया था, उनके पति के जीवित रहते हुए अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। गोवध उनके लिये असहज हुआ और उसके लिए झांसी की रानी ने भी विद्रोह किया था। इस तरह उस समय के गोभक्तों ने यह गोहत्या का विरोध देशभर में अपने-अपने स्तर पर किया और यह 19वीं शताब्दी के मध्य तक चलता रहा।

उसके कुछ पहले 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक नए रूप से अंग्रेजो को यहां से बाहर भेजने का और भारत को आजाद करने का आंदोलन छिड़ गया और वह 30-40 साल बाद में इस स्थिति में पहुंचा कि वे शासक अपने स्थान में वापिस चले गए और भारत को दो भागों में बांटकर भारतीयों को स्वतंत्रता दे दी जिसमें कोई स्वतंत्रता नाम की चीज नहीं है, कानून वही है, सब कार्यालयों में भाषा वही है, सारी व्यवस्थाएं वही है, उठने बैठने चलने और संबोधन करने के, संकेत करने के सारे के सारे तरीके आदि अधिकतर आंगल है। हम बहुत ज्यादा पढ़े लिखे नहीं और जानते भी नहीं है, पर जहां तक हमारी समझ है उससे हम कहें तो शासन चलाने का तरीका अंग्रेजों के द्वारा ही स्थापित किया गया वही है। थोड़ा बहुत कुछ बदलाव किया होगा पर जैसे ही देश आजाद हुआ और आजाद देश की पहली संसद में देश के विकास के लिए जो पंचवर्षीय योजनाएं बनती है, वे पंचवर्षीय योजनाएं बनी, उन योजनाओं में यह बात कही गई कि देश का विकास हमें करना है तो औद्योगिक व्यवस्थाएं, फैक्ट्री, कल कारखानों की व्यवस्था करनी होगी, सड़के बनानी पड़ेगी, बिजली लानी होगी। बहुत सुन्दर बातें हैं सारी की सारी। देश में अधिक से अधिक उद्योग लगाने होंगे जिससे लोगों को रोजी-रोटी मिले।

उसमें वे लोग भी थे जो पूरे जीवन में इसी लिये संघर्ष कर रहे थे कि ये लोग जायं तो हम गोमाता को पुनः संविधान की दृष्टि से वो स्थान दिलाएं जो वैदिक काल में था। यह तो सब ठीक है पर आप बताइए जिसके लिए हम चले थे उसके लिए आपके पास क्या योजना है तो बोले उसके लिए हमारे पास कोई योजना नहीं है। वह आप जो सोच रहे हैं कि ग्राम को स्वावलंबी बनाओ और स्वराज्य की बात जो गांधी जी के द्वारा कही गई है वह तो 17 वीं शताब्दी से पीछे जाने की बात है। गाय से ग्राम और ग्राम से भारत का अभ्युदय यह तो पहले की परिकल्पना है, हम तो सड़क और फैक्ट्री का काम करेंगे और इसी से देश का विकास होगा। ऐसी बात करने वाला उस समय देश के शासन का मुखिया था और अपने पूर्वजन्म की तपस्या के बल से लेस था तो उसके निर्णय को और उसके कार्य को कोई रोक नहीं सका।

देश में खुलकर किसी ने प्रचार नहीं किया यद्यपि 100 में से अनुमान है अन्वेषण आप करें सब पढ़े-लिखे विद्वान लोग हैं, हमारा अनुमान है कि उस समय भारत के वे प्रबुद्ध लोग जो भारतीयता में और सनातन धर्म में निष्ठा रखते हैं वे 60 से 70 प्रतिशत लोग उस समय की व्यवस्था से बिल्कुल सहमत नहीं थे पर उन्होंने उस बात को बाहर प्रचारित नहीं किया कि मुश्किल से आजादी मिली हैं और अभी हम लड़ेंगे-झगड़ेंगे तो ठीक नहीं होगा। इस कारण धीरे-धीरे वह विचार अलग पड़ा और एक राजनीतिक सोच और जगी कि भाई नहीं, यह संगठन, इस संगठन का मुखिया तो भारत और भारतीयता को स्वीकार नहीं करेगा इसलिए हमें कोई नई सोच का दल देश में चाहिए और वह कभी सत्ता में आएगा तो

भारत और भारतीयता के जिस लक्ष्य को लेकर हम चले थे उसे पूरा करेंगे।

यह बीज पड़ा एक नई विचारधारा का और उस बीज का धरातल था राष्ट्रीय स्वयंसेवक और राष्ट्रीय स्वयंसेवक का आधार था हिंदू शास्त्र, हिंदू धर्म और हिन्दु धर्माचार्य। हिंदुत्व, हिंदू धर्माचार्य और हिंदू शास्त्र उसके आधार थे। कोई अपने मन की कल्पना नहीं है। किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों का नाम हिंदू है वह तो बहुत बढ़िया बात है, पर हिंदुत्व की जब बात आती है तो हिंदू धर्म का अर्थ मानव जीवन जीने की कला से है- आप कब उठोगे, कब सोओगे, क्या बोलोगे, कैसे बैठोगे, क्या जीमोगे, क्या नहीं जीमोगे आदि आदि। इस तरह की जो मानव जीवन जीने की विधि है और उसका आधार हिंदू शास्त्र और हिंदू धर्माचार्य है। इस दृष्टि से इस विचारधारा से इस धरातल पर जो बीज बोया गया था वह धीरे-धीरे-धीरे विकसित हुआ।

यद्यपि आप हम सब जानते हैं कि उस काल में भी देश के धर्माचार्यो ने गोरक्षा के लिए विशेष रूप से एक विराट प्रयास किया और लाखों लोग दिल्ली में एकत्रित हुए। देवयोग से वह आंदोलन सफल नहीं हो पाया। उनके साथ क्या व्यवहार हुआ यह हम कुछ कह नहीं सकते हैं पर सुनते हैं वह यह है कि बहुत सारे लोगों की हत्या हुई थी। संख्या कोई निश्चित नहीं है। कितने लोगों को मारा गया, कितने लोगों को जमुना जी में पत्थर के साथ बांधकर डुबो दिया, कितने शरीरों को मिट्टी का तेल डालकर जला दिया गया? मरने वालों की संख्या जो शासन ने बताई वह तो शायद 70 का आंकड़ा है पर उस समय जो आंदोलन में थे उनमें से बहुत सारे महापुरुष मिले हैं, उनका कहना है कि 6 से 8 हजार लोगों की हत्या हुई थी और उनमें से अधिकतर नागा बाबा थे, गांजा पीने वाले और हाथ में चिमटा रखने वाले। उनके आगे पीछे तो कोई परिवार थे नहीं, इसलिये बातें दब गई।

उसका कारण बताया कि उस समय जब मंच पर प्रवचन चल रहा था तो राम प्रकाश वीर शास्त्री आर्य समाज के थे और वह सांसद थे वह सीधे संसद में से आए और माइक जैसे रखा था उन्होंने ले लिया और बोलना शुरू कर दिया कि यहां बैठे-बैठे क्या कर रहे हो? अगर गोरक्षा करनी है तो संसद को घेरो। कानून बनाने वाले तो संसद में बैठे हैं। ऐसा आहवान किया तो भोले मन के साधुओं ने कहा ठीक है, चलो संसद को घेर लेते हैं। फटाफट चल दिये, उधर सरकार की ओर से उन पर गोलियों चलाई और बहुत जन की हत्या हो गई। उनके पीछे कोई जांच करने वाला था नहीं, खोज करने वाला था नहीं इसलिये आज तक सही संख्या का पता नहीं लगा कि कितनी हत्याएं हुई।

पूज्य डॉक्टर साहब, संत सब विराजे हैं, सबको पता है कि 1966 के बाद में 1995 तक देश में केवल गोमाता की जय हो इस बात से आगे व्यक्तिगत रूप से भले ही हुआ हो पर सामूहिक रूप से गाय के लिये कोई काम नहीं हुआ। यद्यपि जैसा आपने बताया श्रीराम शर्माजी ने उपासना की दृष्टि से गोमय से निकले जौ पर रहकर गायत्री पुरश्चरण किये ऐसे और भी अनेक लोगों ने किये होंगे, हमें उनके बारे में कोई जानकारी नहीं है, पर गोवंश रक्षण के लिये कोई सामूहिक प्रयास नहीं हुआ और यह भी सत्य है कि जो मुगल, तुरक, पठान, अंग्रेज गऊओं और गऊओं के अधिकारों के साथ जो छेड़छाड़ नहीं कर पाये वो इन्होंने किया आजाद भारत में। गोचर भूमियों जो वैदिक काल से चली आ रही थी, 1947 तक सुरक्षित थी उनका विनाश स्वतंत्र भारत में इन्होंने किया और अब तो 25 प्रतिशत गोभूमियों नहीं बची है। पहाड़, ओरण, नदियों, तालाब, आगोर, वन, जैसा कि डॉक्टर साहब ने कहा 4-4 योजन तक नदियों के किनारे कोई नहीं बसता था, सब गोमाता के विचरण के लिये रहती थी ...शेष अगले अंक में उनकी हत्या सबको पता है कि उसे दिन के बाद 1966 के बाद में 1966 से लेकर 1995 तक देश में

भगवत्प्राप्ति में बाधक चार दोष

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज)

जब कलिकाल में जीव का कल्याण इतना सहज सरल और सस्ता है तो फिर कल्याण में बाधा क्या है? चार प्रकार के दोष ही कल्याण में बाधक है। कितने दोष, चार दोष। इन चार दोषों के कारण कलिकाल में मनुष्य का कल्याण नहीं हो पाता है।

पहला दोष है मंदा यानि आलसी। भजन और भोजन में कोई आलस नहीं, पर भजन के नाम पर प्रमाद। क्या करें आज तो रात को नींद ही नहीं आई, आज उठने में बहुत देर हो गई आज तो माला ही नहीं हुई, आज तो कोई मेहमान आ गए थे। कुछ न कुछ समस्या तो बनी रहेगी हमेशा। कभी ठण्डी होगी ज्यादा, कभी गर्मी ज्यादा होगी, कभी बरसात आ जायेगी। कुछ न कुछ रहेगा ही। पर इस बहाने बाजी में हम लोगों का अमूल्य समय नष्ट हो रहा है। साधन में प्रमाद यह पहला दोष है जो जीव के कल्याण में बाधक है।

दूसरा दोष है- सुमंदमति। एक तो होते हैं मंदमति यानि कि मंदबुद्धि। कई होते हैं न बालक मंदबुद्धि, बड़े हो जाते हैं तो भी मां-बाप को उनकी सार संभाल करनी पड़ती है। वे कुछ ज्यादा समझते नहीं है। उनकी शक्ल-सूरत भी अलग होती है, देखने से ही लग जाते हैं कि ये मंदबुद्धि है। तो यह तो है मंदबुद्धि, पर दूसरा दोष है वो है सुमंदमति। कलियुग का आदमी बहुत चालाक-चतुर है, अपने को बहुत बुद्धिमान पढ़ा-लिखा अपने को वृहस्पति से कम नहीं समझता। हर आदमी अपने को पंडित-विद्वान समझता है और जो कुछ अच्छी उपदेश की बात आप उसे बता रहे हैं कहेगा तुम क्या बता रहे हो, गीता, भागवत, रामायण की बात तो हम पहले से ही जानते हैं। आप जो कुछ उसे अच्छी बात सुना रहे हो और पंडित बन रहे हो कि हमने बहुत अच्छी बात सुनाई वो तुमसे ज्यादा जानता है, क्या सुनाओगे उसको?

आशय समझे या नहीं समझे? आशय यह है कि जानकार होकर, चतुर होकर, बुद्धिमान होकर भी पागलों का सा अभिनय कर रहा है। पागलपने में जी रहा है। अच्छी बातें सुनकर कंठस्थ करके दूसरों को भी सुना देता है। मौका पड़ने पर स्वयं उन्हें जीवन में उतार नहीं पाता। संतों के सुउपदेश सुनने के बाद भी वह अपने जीवन की दिशा नहीं बदल पाता है, अपने जीवन की दशा नहीं बदल पाता है। न अपने जीवन की दिशा बदल पाता है और न ही जीवन दशा बदल पाता है। उसके लिये तो एक ही कहावत चरितार्थ होती है ढ़ाक के वही तीन पात। आत्मनिरीक्षण करो तो क्या अंतर आया? क्या अंतर आया, पहले थे वैसे ही रहे। यह है सत्पुरुषों के उपदेशों को सुनकर भी अपने व्यवहार को, अपने जीवन को न बदल पाना। यह दूसरा दोष है।

तीसरा दोष है कि भगवान की सबसे भारी कृपा जब जीव पर होती है तो उसको संत का संपर्क प्राप्त होता है। भगवत प्राप्त संतों का सानिध्य, उनका दर्शन, उनका साहचर्य अपने पुण्य से नहीं मिलता अपने साधन से नहीं मिलता वह केवल और केवल भगवान की अहेतुकि कृपा से मिलता है। अपनी ओर देखते हैं तो हमको लगता है कि इतने संतों का दर्शन होने के बाद भी हम जैसे थे वैसे ही रह गए हम उनका विशेष लाभ प्राप्त नहीं कर पाये। यह तीसरा दोष है मंदभाग्य। सत्पुरुषों की सन्निधि प्राप्त होने के बाद भी उसका जो लाभ मिलना चाहिए वह लाभ नहीं मिल पाया, ना काम कम हुआ, ना क्रोध कम हुआ, ना लोभ कम हुआ, ना मद कम हुआ, ना

मात्सर्य कम हुआ। कोई विकार कम नहीं हुआ क्या यह इन संतों के संग का दोष है? नहीं-नहीं-नहीं इनका कोई दोष नहीं। न इनका दोष और न श्री ठाकुरजी का दोष, न समय का दोष- है प्रभु सब मेरो ही दोष! विनय पत्रिका में तुलसीदास गोस्वामीजी महाराज कहते हैं। सब दोष तो मेरा है। भगवान को दोष कैसे दिया जाए सब दोष हमारा है। अब ध्यान देकर सुनें- भगवान की कृपा से सतपुरुष मिले, भगवान की कृपा से भगवत्प्राप्त महापुरुष मिले, उनकी सन्निधि मिली और लाभ नहीं ले पाए। क्यों नहीं ले पाए?

श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी का दर्शन हुआ हमको खूब, बगल में ही मंदिर है जब-जब भी वे आते महाराज जी उनके दर्शन करने जाते हमें भी ले जाते, वे दिव्य महापुरुष थे। उड़िया बाबा का दर्शन हमको हुआ नहीं नाम उनका भी हमने सुना था। पूज्यश्री सुदामादास जी महाराज, कितने दिव्य कोटि के थे, पूज्य श्री चंद्रशेखर बाबा, कितने संतों का नाम लें हम। संतों की सन्निधि मिलने के बाद भी हमें लाभ इसलिये नहीं मिलता कि संतों का संग करने में हमें कुछ सावधानियां रखनी चाहिए वो सावधानियों हम नहीं रख पाते हैं। चार दोष ना हो और हम संत का संग करें तो तत्काल लाभ होगा। यह हमारा भाव नहीं है, यह देवर्षि नारदजी का भाव है।

संतों के लिए नारदजी कहते हैं- यद्यपि संत तुल्यदर्शन वाले होते हैं, समान दृष्टि उनकी होती हैं, उनके दृष्टि में भेद नहीं होता है, लेकिन फिर भी उन संतों ने मुझे बालक नारद के ऊपर विशेष कृपा कर दी, क्यों की कृपा? तो नारदजी कहते हैं- उन्होंने मुझ में चार गुण देखे इसलिए कृपा कर दी। कौनसे चार गुण? सबसे पहला गुण है चंचलता का अभाव। आप किसी भी सत्पुरुष की सन्निधि में है तो आपको गंभीर रहना चाहिए। चंचल नहीं होना चाहिए, अस्थिरता नहीं होनी चाहिए। महात्माओं का संग छोड़कर लोग कहते हैं हम तपस्या करेंगे, अनुष्ठान करेंगे। भले आदमी! सम्पूर्ण साधनों को निष्कामभाव से किए जाने का फल तो है भगवत दर्शन और भगवत दर्शन का फल है संत दर्शन और ऐसे संत मिले हुए हैं और छोड़कर तुम तपस्या करने जा रहे हो? उनकी सन्निधि ा छोड़कर के जाने का तुम्हारा मन करता क्यों है? सन्निधि में रहना नहीं चाहते, यह है- चंचलता। तो यह है पहला गुण चंचलता का अभाव।

दूसरा गुण है दान्त। दान्त यानि जितेंद्रीय होना। जितेंद्रीयता का अर्थ है विवेक पूर्वक अपनी इंद्रियों से पदार्थो को ग्रहण करना। जितेन्द्रीय का यह अर्थ नहीं कि हम देखें, सुनें, बोलें नहीं। सब कुछ करें लेकिन विवेकपूर्ण करें। जो देखना चाहिए, वो देखें, जो करना चाहिये वो करें, जो बोलना चाहिये वो बोलें। जितेन्द्रीय अर्थात् इंद्रियों से विषयों को मर्यादा पूर्वक ग्रहण करें। अजितेन्द्रीय व्यक्ति को भी संत की सन्निधि का लाभ नहीं मिलता।

अब जितेंद्रीयता का प्रमाण क्या है? बहुत ध्यान से सुनें। जितेंद्रीयता है केवल इस जिव्हा को जीत लेना। सारी इंद्रियों को जीत लिया किसी ने किंतु इस रसना को नहीं जीता किसी ने वो जितेन्द्रीय नहीं हो सकताऔर जिसने इस रसना को जीत लिया उसने सारी इंद्रियों को जीत लिया। रसना को जीतना है व्यर्थ की बकवाद न करना है, रसना को जीतना है खट्टे, मीठे, चटपटे पदार्थो को खाने की ललक न होना। जो भगवत प्रसाद मिल जाए बिना कामना के, बिना संकल्प के भगवान की कृपा से लूखा, सूखा उसे खा लो।

जड़ भरतजी के सामने हलवा, पूरी, कचोरी रख दो तो उनको प्रसन्नता नहीं होती थी कि आज तर माल आ गये। भैयाजी, उनकी भाभियों जला हुआ भात, सड़ा हुआ भात, और तो और चोकर/भूसी रख देती भरकर थाली तो भूसी को भी उसी प्रेम से खा जाते जैसे कोई घी-बूरा हो। इसको कहते हैं

जितेन्द्रीयता, समझे बाबुजी। बढ़िया साग तो चाहिये, चटनी तो चहिये, गर्म-गर्म फुलके तो चाहिये यह नहीं। गड्ढ़ा भरना है, इस क्षुधा कुकड़ी को टुकड़ा देना है। वो भी जो मिल जाए। हम तो खट्टे, मीठे से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं, भगवान के पास क्या पहुंचेंगे? सबसे दुष्ट इंद्री है यह जिव्हा कहो या रसना। अभी परमहंसजी नहीं है यहाँ, वृन्दावन चले गये। अनुमान है हमारा, 25 वर्ष तक आपने न दूध लिया, न दही लिया, न घी लिया, न मिठाई ली, न नमक लिया, न मिर्च ली, न खटाई ली, न तेल लिया, न फल लिये, कुछ नहीं। रोटी को यमुना जी के जल में भिगो लिया और पा लिया। बर्तन नहीं था तो लोहे का कटोरा स्टील का नहीं लोहे का, ऐसे कहीं से फेंका हुआ मिल गया होगा, उसी को मांजकर रख लेते तसला जैसा बनाकर। वो कटोरा भी नहीं था भैया जी पुराने कोई ऐसा डिब्बा मिल गया उसका ऊपर का वह डंडा टूट गया होगा उसी को रख लेते और यमुना जी का जल रखते थे बगल में, पंगत में बैठकर पाते प्रसाद, पंगत में बैठकर। रोटी होती तो मिल जाती, पानी पास में होता ही था। पर जब पक्का भण्डारा होता तब कोठारी से थोड़ा आटा मांग लेते उसका स्वयं टिक्कड़ बना लेते और पाते वहीं पंगत में बैठकर। आमने-सामने सब साधु खीर मालपुआ उड़ा रहे हैं और वे उनके बीच में बैठकर पानी में भिगा कर रोटी खाते। एक दिन दो दिन नहीं रूंगटाजी, कम से कम 25 वर्ष तक।

एक बार वे बहुत बीमार हो गए कमजोर शरीर से तो थे ही। फिर उनको रामकृष्ण हॉस्पीटल ले गए, भर्ती कर लिया। उस समय शक्तिस्वामी थे रामकृष्ण मिशन में। बहुत अच्छे संत थे। वे नाराज हो गये महाराज जी के ऊपर बोले आपने कैसा मरीज भर्ती किया? अरे कुछ नहीं खाता है। खिचड़ी खा लो के नहीं खाऊंगा, दाल पी लो तो के नहीं पिऊंगा तो क्या खाओगे? जैर खायेगा, क्या खायेगा? गोली खायेगा के नहीं खाऊंगा, सीरप पियोगे के नहीं पिऊंगा, यह तो मीठा है, खट्टा है। खट्टा-मीठा कुछ खाते ही नहीं थे। ले जाओ इस मरीज को। महाराज जी ने बड़े प्रेम से समझाया परमहंसी आपकी साधना पूरी हो गई है, कुछ बाकी नहीं है। अब जो भगवान को भोग लगता है जो अपने आप आ जाए उसको ठाकुर जी का प्रसाद मानकर प्रेम से पा लो। महाराज जी ने पवाना शुरू किया तो उन्होंने पाना शुरू किया। आपकी कैसी अवस्था है। इसको कहते है जितेन्द्रीयता।

तीसरा है अनुवर्तन। अनुवर्तन का अर्थ है महात्माओं के पदचिन्हों पर चलना। आप जिस संत की सन्निधि में रहते हैं उस संत के पद चिन्हों पर चलना। अच्छा भैया जी बताओ कि बड़े से बड़े महापुरुषों के पास रहने वाले क्या उनके पद चिन्हों पर चलते हैं? कहीं भी देख लो आप, परिकर में देख लो। बातें तो हम लोग उन्हीं की करते हैं। बातें तो हम करेंगे क्योंकि उनके नाम से हमको रोटी मिल रही है, पेट भर रहा है लेकिन उनका अनुशरण हम नहीं करते, अनुगमन हम नहीं करते। अनुगमन की बात तो छोड़ दो गुरु जी कहे बेटा पूरब जाओ हम पश्चिम जायेंगे, कहेंगे हमको पश्चिम की हवा अच्छी लगती है। हमारी हालत यह है।

चौथा गुण अल्प भाषण। जिस किसी भी महापुरुष की सन्निधि में आप हैं उनसे जितना आवश्यक समझो, अत्यंत आवश्यक समझो उतना बोलो। क्योंकि अधिक बोलने में कभी ना कभी उनकी अवज्ञा हो ही जाएगी, अमर्यादा हो जाएगी। बहुत बोलने से भी अवज्ञा हो जाती है। अल्प भाषण का मतलब यह नहीं कि वे कुछ पूछे तो भी गुमशुम रह जाएं। अब बोलो कौन गुरु कौन चेला भयो? कहने को तो हम शिष्य हैं, पर हम ही गुरु बन बैठते हैं। यह है अल्प भाषण। यदि हम संतों का लाभ लेना चाहते हैं तो गंभीरता, जितेंद्रीयता, अनुवर्तन और अल्प भाषण यह चार गुण यदि हमारे जीवन में आ जाएंगे तो तुम

किसी भी साधु का संग करोगे तो आपको उसका पूरा लाभ मिल जायेगा। यह है मंदभाग्य दोष।

चौथा दोष है प्रपंची स्वभाव। उपद्रवग्रस्त जीवन। इतने उपद्रव हमने पाल रखे हैं कि वह हटाए नहीं हटते हैं। आत्मबल बहुत गिर गया है। इन उपद्रवों को हम छोड़ ही नहीं पाते हैं। भैयाजी उपद्रव की परिभाषा क्या है? बहुत लम्बी चौड़ी परिभाषा नहीं है। भगवान की सेवा में, भगवान के भजन में जो भी बाधक है वो सब उपद्रव है। त्याग दो उसको। छोड़ दो उसे। तो देखो इन चार दोषों में मुख्य दोष है आलस। यदि हम साधन में प्रमाद करना बंद कर दें तो फिर दूसरा दोष अपने आप नहीं रहेगा। मंद भाग्य नहीं होगा, फिर संतों की सन्निधि का पूरा लाभ मिलेगा। जितेन्द्रीयता अपने आप आ जायेगी। साधन करेंगे तो इंन्द्रियों अपने आप निर्यंत्रित हो जाएगी। फिर संतों के पद चिन्हों पर चलने का स्वभाव बन जाएगा, फिर इधर-उधर की बकवाद अच्छी नहीं लगेगी तो अपने आप कम बोलने लग जाएगा, अंतर्मुखता हो जायेगी। अनुभव किया हमने। सब हो जायेगा, आप इसे करके तो देखो।

दोष कैसे-कैसे

(संकलित)

ईर्ष्या

यह एक नकारात्मक भाव है। ईर्ष्या मनुष्य के स्वभाव का बहुत गंभीर दोष है और अग्नि के समान है। उसको समझ में नहीं आता, है पर वह बिना ही हेतु अपने को भीतर ही भीतर जलाता रहता है। ईर्ष्या दूसरों की उपलब्धियों, गुणों या संसाधनों से असुरक्षा और जलन की भावना को जन्म देती है। यह अक्सर दूसरों से तुलना करने के कारण होती है और इसे नकारात्मक भावना माना जाता है।

ईर्ष्या के लक्षण:

अपने परिचित या निकट संबंधी किसी की सफलता को देखकर मन में असंतोष और हीन भावना होना।

किसी की संपत्ति, रिश्ते या स्थिति को देखकर जलन महसूस करना। अनजान या दूर के लोगों से ईर्ष्या कम होती है या होती ही नहीं है।

ईर्ष्या के कारण:

अपनी क्षमताओं या कौशल पर संदेह करना, आत्म-छवि कमजोर होना, असुरक्षा की भावना, अपने निकटजनों से तुलना करना, सदैव यह भाव रखना कि दूसरे का अच्छा नहीं हो जाय।

ईर्ष्या के प्रभाव:

ईर्ष्या से उपजा द्वेष आत्मा के लिए अहितकर होता है और आत्म विकास में बाधक होता है। ईर्ष्या से व्यक्ति का विवेक पथभ्रष्ट हो जाता है और गलत निर्णय लेने की संभावना बढ़ जाती है। ईर्ष्या से आपसी संबंधों में कटुता का वातावरण बनता है और रिश्ते खराब हो सकते हैं।

ईर्ष्या से बचने के उपाय:

अपनी कमजोरियों को स्वीकार करना और उनको दूर करने का प्रयास करना। आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाना। दूसरों की सफलता की प्रशंसा करना और उनसे सीखकर आगे बढ़ने का प्रयास करना तथा दूसरों से तुलना करना बंद करना और अपनी जीवन यात्रा पर ध्यान केंद्रित होना।

संक्षेप में, ईर्ष्या एक नकारात्मक भावना है जो व्यक्ति को अंदर से खाली कर देती है और दूसरों की सफलता को स्वीकार करने में बाधा डालती है। इससे किसी की सफलता रूकती नहीं है, बस केवल स्वयं जलते रहता है। इससे बचने के लिए अपने आप पर काम करना, आत्म-सम्मान बढ़ाना और दूसरों की सराहना करना और दूसरों की उन्नति को देखकर खुश रहना आवश्यक है। ईर्ष्या करने वाले से ईश्वर नाराज रहते हैं।

गीता ज्ञान

पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज

पिछले अंक से आगे .....

बड़ा भाई होने के कारण अपने पुत्रों को कुरुवंशीय और छोटे भाई के बेटों को पाण्डूवंशीय बना दिये। इसीलिये कहा मामका। माम शब्द अहम वाचक है। अहम से मम बना। मामका मतलब मम पुत्रः। कौन है मम पुत्रः, 100 पुत्र आये हैं युद्ध के लिये। 100 पुत्रों में से हम 2 नाम ले लेंगे और कई कौरव पक्ष के बड़े-बड़े वीरों का नाम हम ले लेंगे- दुर्योधन, दुस्शासन, कर्ण, कृप, द्रौण, भीष्म। ये छः नाम ले लेते हैं हम पहले। इन 6 नामों का बड़ा अनुशीलन करेंगे हम।

दुर्योधन कौन है? आप देखेंगे कि कौरवों के कई नामों में 'दुर्' उपसर्ग युक्त है। 'दुर्' शब्द दूषित, नकारात्मक, दुर्गुण वाचक है। दुर् का अर्थ है बुरी तरह से या मुश्किल से और योधन का अर्थ है योद्धा या लड़ना। इसलिये दुर्योधन का अर्थ है जिसे जीतना मुश्किल है या जो बुरी तरह से लड़ता है, जिसके साथ युद्ध करना इतना सहज नहीं है। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्। काम वह है जिसके साथ युद्ध करना मुश्किल है। दुर्योधन काम का प्रतीक है। दूसरा नाम है दुशासन। इसमें भी 'दु' उपसर्ग है। इसका अर्थ है- शासन करना, संयम करना। दुस्शासन मतलब जिस पर शासन करना, संयत करना, संयम करना कठिन हो। 'दु' कौन है? क्रोध, कामः क्रोधः । काम और क्रोध की स्थिति कहाँ है- मूलाधार चक्र में स्वाधिष्ठान चक्र में है। मूलाधार चक्र में दुर्योधन, स्वाधिष्ठान चक्र में दुस्शासन।

मेरे गुरुदेव का आविर्भाव पश्चिम बंगाल के नदिया जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था। आपके पिताजी संस्कृत के विद्वान होने के साथ ज्योतिष के बहुत जानकार थे। उन्होंने पुत्र के जन्म पर उनकी कुण्डली बनायी जिसमें उनके सन्यासी होने की बात आयी। इसलिये पिताजी बचनप से ही उन्हें उसी प्रकार से शिक्षित कर रहे थे।

मेरे गुरुदेव अपने बचपन की एक कहानी सुनाते थे। जब वे 5-6 साल के छोटे बच्चे थे तब उनके गाँव में रंगमंच पर 'कर्ण वध' नाम से एक नाटक का मंचन हुआ, उसमें कर्ण के वध को देखकर मेरे गुरुदेव रोने लगे कि श्री कृष्ण ने कर्ण को अन्यायपूर्वक क्यों मरवाया? रोते हुए घर गये तो पिताजी ने गोद में ले लिया। 5-6 साल के पुत्र को पिताजी ने कैसे समझाया यह हम आज बोल देते हैं। गुरुदेव के पिताजी बोलते हैं- कर्ण कौन है? बेटा यह कान कर्ण है। कान बड़ा दानी होता है। जो भी बोलते हैं, सुन लेता है। साधारण आदमी की कोई आत्म प्रशंसा करता है या दूसरों की बुराई करता है तो कर्ण सुनने को तत्पर रहता है। गुरुदेव के पिताजी कहते हैं कि कर्ण के वध काअर्थ होता है अपने कान को संयत करके रखो। आजकल के बच्चे पता नहीं कान ऐसा कुछ यंत्र डालकर रखते हैं और पता नहीं क्या सुनते हैं? हम तो दिन-रात केवल अनहत नाद सुनते हैं। अनहत बाजे बांसुरी। अनहत नाद को सुनो, शास्त्रों का श्रवण करो, ऋषि-मुनियों को श्रवण करो यह भारतीय परम्परा है। आज के युवा उसको नहीं सुनकर पता नहीं क्या-क्या सुनते रहते हैं।

कर्ण कौन है? कर्ण महायोद्धा थे। कर्ण भी पांडव थे। कर्ण माता कुन्ती के पुत्र थे, सूर्यदेव के पुत्र थे। कर्ण वीर और महातेजस्वी थे। वे बड़े महान योद्धा होकर भी गलत रास्ते पर चले गये। उनकी संगत खराब होने के कारण वे गलत लोगों के साथ हो गये। एक ृश्लोक याद आ गया-

अहं मुनीनां वचनं श्रृणोंमि, श्रृणोत्मयं यद् यवनस्य वाक्यम। न चास्य दोषो न च मे गुणों वा, संसर्गजा दोषगुणाः भवन्ति।।

मैं साधुओं की वाणी सुनता हूँ, वह तोता क्रूर डाकुओं की बात सुनता है, न उसमें कोई बुराई है और न मेरे में कोई अच्छाई है। अच्छी या बुरी संगत से ही गुण दोष पैदा होते हैं। इसीलिए हर मनुष्य को अच्छी संगति में ही बैठना चाहिए।

एक पक्षी बेचने वाला मदारी दो तोते लेकर एक जगह खड़ा था। एक का मूल्य 1 रुपया और दूसरे का 1 लाख रुपया बता रहा था। लोग पूछते अरे भाई! दोनों ही तोते ही तो है। मूल्य में इतना अंतर क्यों? वो कहता दोनों से बात करके देख लो। यह बात राजा के पास चली गई। राजा ने मदारी को बुलाया और तोतों काभाव पूछा। उसने वही बात बताई कि यह एक रुपये का और वो एक लाख का। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि दोनों ही ताते ही है, भाव में इतना अंतर क्यों? मदारी ने कहा आप दोनों से बात करके देख लो तब समझ में आयेगा। राजा ने एक लाख वाले तोते से बात की तो बोला सर्वेषाम् मंगलम भवतु! सर्वेषाम् स्वस्तिर्भवतु! सर्वेषाम् शांतिर्भवतु। वाह! वाह! भाई यह तो शास्त्र और स्वस्तिवाचन करता है।

फिर मदारी ने कहा दूसरे तोते से बात कर लो। राजा दूसरे तोते के पास गया तो वो बोला- बदमाश! चोर कहीं का! जाओ-जाओ! हटो- हटो! मारो-मारो! वोतो ऐसे चिल्लाने लगा। राजा ने मदारी से पूछा अरे भाई! दोनों तोता है, एक स्वस्तिवाचन करता है, एक गाली देता है क्यों? तभी वो स्वस्तिवाचन करने तोता बोला- हम दोनों एक ही माता-पिता की संतान हैं। भाग्यवश मैं ऋषि-मुनियों के आश्रम में रह गया और यह डाकुओं के घर में रह गया। मैंने मुनियों के वचन सुने और इसने क्रूर डाकुओं के वचन सुने। मेरा कोई गुण नहीं, इसका कोई दोष नहीं, हमको जैसी संगति मिली वैसे हम सीखे।

मेरे गुरुदेव कहते थे कि- हमेशा आत्मसंग में रहो, इंद्रियसंग में नहीं। आत्मसंग में कैसे रहोगे? श्वास को अवलम्बन करके श्वास के संग अंदर जाओ, बाहर आओ। श्वास के तंबूरा में श्वास की तार बोले- जय सीयाराम राम, जय श्रीराधेश्याम। यह तन तंबूरा है। श्वास के साथ आवाज निकलता है- अहम् सो अहम् सो, सोहम् सोहम् राधेश्याम सीताराम, श्याम श्याम राम राम। हमेशा श्वास का अवलम्बन करो। श्वास आता है और जाता है। इस पर ध्यान रखो। इसके साथ अंदर जाओ-बाहर आओ। साधना का यह मूल है। हमारे क्रियायोग में जो साधना है वो श्वास को पकड़कर भीतर घुसो। हमारे पूज्य गुरुदेव बोलते थे आत्मा के संग में रहो, इंद्रियों के संग में मत रहो। वे बोलते थे खाना तो खाना पड़ेगा, लेकिन उनका स्मरण करके खाओ, देखते हो तो कौन भीतर से देखता है उसको स्मरण करो, बोलते हो तो भीतर से कौन बोलता है उसका अनुभव करो। हमारे गुरुदेव कहते थे कि वाणी जो मुख से प्रकट होती है वो वैखरी है, बिखरती हुई मुंह से। इससे पहले 3 स्तर होता है- परा, पश्यन्ति, मध्यमा। परा है आत्मा। जो वाणी निकलती है उसको देखो, पश्यन्ति। मुख के भीतर है वो मध्यमा, बोलूं कि नहीं बोलूं और जब निकलती है वो ही वाणी आत्म चेतन युक्त होता है तो वो ही वाणी मंगलकारी होती है। तो आत्म सुखाए जगत् हिताय च! आत्मनो मोक्षार्थ जगत् हिताय च।

कर्ण कहाँ है? हृदय चक्र में। अनहद चक्र में कर्ण है। नाभी चक्र में द्रोण है। कंठ चक्र में कृपाचार्य है। आज्ञा चक्र में भीष्म है। द्रोण का अर्थ क्या है? मेरे पूज्य गुरुदेव कहते थे द्रोण एक पक्षी है। काक (कौआ) पक्षी का दूसरा नाम है द्रोण पक्षी। काक पक्षी का एक विलक्षण स्वभाव है। उसके दो आँख है और दोनों आँखें एक साथ रखकर इधर-उधर देखता है। एक साथ दोनों आँख से समान रूप से नहीं देख सकता। द्रोण आचार्य थे मगर वे पक्षपाती थे। दोनों आँखों से जब एक को देखते तो दूसरे को नहीं देखते थे। आचार्य के लक्षण होते हैं सामने सभी को

समान रूप से देखना। उनको आचार्य क्यों बनाया? हमारे गुरुदेव कहते थे- एकलव्य आया पढ़ने के लिये तो उसे नहीं पढ़ाया, क्योंकि वो ज्यादा योग्य था, अर्जुन को बहुत प्रेम करते थे मगर अश्वस्थामा को अधिक पढ़ाने हेतु बीच में अर्जुन को पानी लेने भेज देते। पांडवों के प्रति श्रद्धा है कि ये अच्छे लोग हैं मगर युद्ध में कौरवों के पक्ष में जाकर खड़े हो गये। वे पक्षपाती थे।

हम जो अन्न ग्रहण करते हैं नाभी चक्र में, अन्न से विचार बनता है। अन्न के ऊपर दो शब्द बोल देते हैं। पिछले 30-35 वर्षो में भारतवर्ष में अन्न के क्षेत्र मेंएक भारी दुर्घटना घटी। आप कहेंगे अन्न तो बहुत उत्पन्न हो रहा है, फिर दुर्घटना कैसे घटी। वो दुर्घटना ऐसे घटी की देश में अन्न को भारी संकट उत्पन्न हो गया है। स्थूल रूप से तो अन्न बहुत उत्पन्न हो रहा है कोई संकट नहीं है, मगर सूक्ष्म रूप से बड़ा भयानक संकट पैदा हो गया है। घर-घर में बीमारी, घर-घर में मानसिक विकृति, घर-घर में अस्थिरता क्यों? ये सब अन्न दोष है।

देखिये हम धरती को माँ बोलते हैं। माँ बोलकर खेती करने के समय धरती में हम रासायनिक खाद और कीटनाशक रूपी जहर डालते हैं। माँ के मुख में जहर डाले यह कौनसे पुत्र के लक्षण है? जब माँ के गोद में छोटा बच्चा होता है तो वह अपने खानपान का ध्यान रखती है कि बालक को तकलीफ न हो जाय। क्योंकि माँ जो अन्न ग्रहण करेगी उसका असर दूध ा में आयेगा। अन्न का मन के ऊपर, शरीर के ऊपर, जीवन के ऊपर असर पड़ता है। पाश्चात्य पद्धति का अनुसरण करते हुए हमने अपनी खेती को बिगाड़ दिया। एक बार के लिये लगता है इससे उपज तो बढ़ गया लेकिन किसान को सही भाव देने वाला व्यापारी नहीं मिल रहा है। चावल तो एक रुपये किलो में लोगों को देने का नाटक कर रही है सरकार। वो चावल, चावल नहीं है। हरित क्रांति के नाम पर जहर की क्रांति। श्वेत क्रांति के नाम पर देश में दूध का संकट हो गया। अभी देश में दूध जैसा सफेद पदार्थ तो मिलता है, पर वास्तविक दूध खत्म हो गया। पूरानी बात है- पं. मदनमोहन मालवीय जी के पास एक सज्जन दो गिलासों में दूध भरकर लेकर आये। एक में गाय कादूध और दूसरे में भैंस का और पण्डित जी को दिया। पण्डितजी ने भैंस के दूध को कहा कि यह दूध है और गाय के दूध की तरफ इशारा करते हुए कहा कि यह दूध नहीं हैं। सज्जन तो परेशानी में पड़ गये कि पण्डितजी क्या बोल रहे हैं? पंडितजी बोले भैंस का दूध है लेकिन गाय का दूध नहीं अमृत है।

आजादी के पहले की बात है, पूज्य संत ब्रह्मचारी जी महाराज, आपने नाम सुना होगा, दर्शन किये होंगे। हमने तो 1978 में उनके दर्शन किये थे, वे कार्तिक मास में पुरी में एक माह रूके थे उस समय हमको दर्शन का सौभाग्य मिला था। उनके पास कुछ राष्ट्रवादी लोग आये और बातचीत में पूछा कि हम किसे हिन्दू बोलें, हिन्दू की परिभाषा क्या है? तो संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी ने कहा कि जो गाय को माता माने वो ही हिन्दू है। तो पूछने वाले ने कहा यह हिन्दू की पूरी परिभाषा नहीं हुई। तो ब्रह्मचारी जी ने कहा- इससे सटीक और पूर्ण परिभाषा हिन्दू की कोई हो ही नहीं सकती। हम गाय को माँ मानते हैं कि नहीं?

आजकल बाजार में दूध, पनीर, घी, मिठाई की कमी नहीं है, लेकिन वो दूध नहीं है, वो घी नहीं है, वो पनीर नहीं है, वो मिठाई नहीं है। एक सरल बात से समझो इसे। बाजार में शुद्ध भारतीय देशी गाय के दूध का भाव क्या है? शुद्ध देशी छोड़ दो, बाजार में दूध का भाव क्या है? 50 रुपये लीटर? एक लीटर घी का क्या भाव है? 700 रुपये लीटर? एक लीटर घी बनाने के लिये 25 से 30 लीटर दूध चाहिये। एक लीटर घी के लिये 1250 से 1500 रुपये का दूध लगता है, इसके अलावा बिलोना करने के

यंत्र, मजदूरी भी लगती है और बाजार में घी मिलता है 700 रुपये में। यह कैसे सम्भव है? इसलिये बाजार में मिलने वाला घी नहीं है।

अभी भारत में जो संकट है अन्न और दूध को लेकर उसके बारे में कोई नहीं सोचता है। अभी-अभी एक पत्रिका के संपादक मेरे पास आये थे। वे पश्चिम उड़िसा बरगढ़ निवासी थे। वे कह रहे थे कि उड़िसा में बरगढ़ जिला सबसे अधिक बीमारियों से ग्रसित लोगों का जिला है। बरगढ़ उड़िसा में लोग मुख्य रूप से क्रोनिक किडनी रोग, स्क्रब टाइफस और केंसर से ग्रसित है। इसका कारण खेती में रासायनिक खादों और कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग करना है।

तो देखिये, खराब अन्न से शरीर में बीमारियों आती है, मन का विकार होता है, जीवन में विकृतियों होती है। तो यहाँ नाभि में द्रोण, हृदय में कर्ण, कण्ठ में कृपाचार्य और यहाँ सिर में भीष्म। कृप शब्द कृपावाचक है। मेरे गुरुदेव को कृपा शब्द बहुत प्रिय था। उनके पास लोग आते और बोलते कि महाराज आशीर्वाद दीजिये, दया कीजिये। हमारे गुरुदेव कहते कृपा। गुरुदेव बोलते कृपा का मतलब क्या है, पता है आपको? 'कृ' का मतलब करो और 'पा' का मतलब पाओ। अर्थात् जो करो उसका फल पाओ। जो करो वो ही पाओ। संत आपको कुछ थोड़े ही देंगे अलग से। आपने किया वो ही पाओगे। यहाँ हमारे सामने तो आंसू और बाहर जाकर लाल आंख! यह नहीं, यह साधक के लक्षण नहीं है।

अभी आ जाइये पांडव शब्द का विवेचन करते हैं। पाण्डु शब्द में 'अ' प्रत्यय लगने से पांडव बना है। पाण्डा, पण्डा, पंडित शब्द का अर्थ होता है जिसके भीतर विवेकात्मक बुद्धि हो, विषयात्मक नहीं। विवेकात्मक का मतलब जो नित्य और अनित्य का विवेचन कर सकता है, जो संसार और परमेश्वर की विवेचना कर सकते हैं जो देह और आत्मा का विवेचन कर सकते हैं वे पांडु। पाण्डु और धृतराष्ट्र वेदव्यास जी की संतान थे। पाण्डु की दो पत्नियों थी। एक थी कुन्ती और दूसरी माद्री। कुन्ती का पहला नाम है प्रथा। प्रथा कृष्ण के दादा शूरसेन की पुत्री थी और कुन्तीभोज राजा के गोद ली हुई थी, वहीं पली बड़ी हुई इसलिये नाम हो गया कुन्ती। एक बार रानी माद्री की जिद पर राजा पाण्डु ने हिरण का शिकार किया और जब पास गये तो देखा कि वे महर्षि किंडम और उनकी पत्नी थे। महर्षि ने उन्हें श्राप दे दिया कि वे कभी स्त्री संसर्ग नहीं कर पायेंगे और किया तो उनकी मृत्यु हो जायेगी।

राजा पाण्डु बहुत तनावग्रस्त थे। कुन्ती ने कहा मेरे पास एक शक्ति है दुर्वासा ऋषि से प्राप्त। कुन्ती ने अपने बचपन की कहानी सुनाई। कहा कि दुर्वासा ऋषि हमारे महल में एक वर्ष तक रुके थे। दुर्वासा ऋषि को तो आप सब जानते ही हो। वे अत्री और अनसूया की संतान और भगवान दत्तात्रय के भाई थे और बहुत क्रोधित स्वभाव के थे। कुन्ती ने कहा कि पिताजी की मुझे आज्ञा हुई कि बेटी आप बहुत समझदार हो, ऋषि दुर्वासा हमारे अतिथि हैं उनकी सेवा करनी है। पिताजी की आज्ञा पर मैंने उनकी वर्षभर निष्ठापूर्वक सेवा की उससे प्रसन्न होकर और अपने तपोबल से यह जानकर कि मुझे भविष्य में कोई संतान नहीं होगी, एक मंत्र दिया है। उस मंत्र से आह्वान कर जिस देवता को याद करूंगी, उसी के जैसा मुझे पुत्र प्राप्त होगा।

कुन्ती ने राजा पाण्डु से अनुमति प्राप्त कर अपने को प्राप्त मंत्र शक्ति से याद कर धर्मराज से युधिष्ठर, पवन देव से भीम और इंद्र से अर्जुन नामक तीनों पुत्रों की प्राप्ति की। रानी माद्री को भी पुत्र प्राप्ति की चिन्ता हुई तो कुन्ती ने कहा कि तूं भी यह मंत्र सीख ले और मुझे विश्वास है तुझे भी पुत्र प्राप्ति होगी। रानी माद्री ने कुन्ती से मंत्र शक्ति सीखकर दोनों जुड़वा भाई अश्विनी कुमारों का स्मरण किया तो उसे नकुल और सहदेव नाम से जुड़वा पुत्र प्राप्त....शेष अगले अंक में

सत्संग की अनमोल बातें

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज
संगरिया

धनी बनने का मूल मंत्र

भगवान से कुछ पाना हो तो भगवान के लिए कुछ दो। दान की प्रवृत्ति का हजारों बार हम कथा में सुनाते रहते हैं कि प्रक्रिया जानो। कहीं किसी का स्रोत है, खजाना है उससे कुछ पाने के लिए पहले डालना होता है। इसमें हम कई उदाहरण देते हैं जिसमें से एक उदाहरण हमको जो बहुत अच्छा लगता है वो बताते हैं। जब लोग पानी का बोर करने के लिए बोरिंग मशीन लगाते हैं, उससे कैसे बोर करते हैं वह तरीका समझ जाओ फिर समझ में आ जाएगा कि क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए।

घर में या खेत में अपने पानी के लिए बोर करते हैं तो एक-दो फुट खुदाई की और वहाँ पाइप खड़ा कर दिया और जहाँ तक पानी आता है वहाँ तक पाइप को ठोक-ठोक कर ले जाते हैं, लेकिन सीधे पाइप ठोकने लग जाएं तो पाइप फट जाएगा वहाँ तक जायेगा नहीं, बीच में ही रुक सकता है क्योंकि बीच में मिट्टी का कचरा आ जायेगा वो पाइप को आगे बढ़ने नहीं देगा। फिर क्या करें? मिट्टी का कचरा हटाने के लिये पानी डालना पड़ेगा। बिना पानी डाले कचरा निकलेगा नहीं। मिट्टी जो फंसेगी पाइप में, पानी डालने से निकलेगी। ऊपर से पानी भरा, ठोका थोड़ा, नीचे गया, फिर पानी डाला ठोका नीचे गया। पानी डालते-डालते-डालते जमीन के उस लेयर पॉइंट पर जाते हैं जहाँ पानी का भण्डार भरा है। आरम्भ में पानी डालने से पाइप में फंसा कचरा निकलता जाता है, ऐसे ही दान करते रहोगे, करते रहोगे, करते रहोगे तो भाग्य का कचरा निकलता जाएगा, निकलता जाएगा, निकलता जाएगा और भाग्य में भरे उस भण्डार तक पहुँच जाओगे।

संपत्ति तुम्हारी है, तुम्हारे भाग्य की है, पर नहीं मिलेगी जब तक पानी पाइप में डालोगे नहीं तो कचरा निकलेगा नहीं, रास्ता नहीं खुलेगा। तो स्टोर पानी लेयर तक पहुँचने के लिये पानी डाला है, उसी प्रकार अपने हिस्से का भाग्य प्राप्त करने के लिये, अपने हिस्से, अपने प्रारब्ध का फल पाने के लिए दान करना जरूरी है। पानी डालते-डालते 200-300 फीट गहराई पर हम पहुंचे फिर भी देखना एक बूंद की कमी भी सहन नहीं करता है, एक लोटा भी कमी होती तो मोटर पानी खींचती नहीं है, मोटर में पानी आयेगा नहीं भले ही बटन दबाते रहो। क्या हो गया? मोटर पर लगा वाल्व खोलो, हवा निकालो और एक लोटा पानी ऊपर से डालो, पाइप भर गया है अब बटन दबाओ, पानी निकलना शुरू हो गया।

बात समझ में आ गई क्या? पानी से जुड़ने के लिए पहले थोड़ा पानी डालना पड़ता है। एक बार पानी क्या डाला सैकड़ों सालों तक वह बोर का पानी पीते रहो, खेत को सींचते रहो, शर्त है कि पहले पानी से भरना पड़ेगा। इसलिए जीवन में धनी होने के लिए, धन के स्त्रोत से जुड़ने के लिए दान करना जरूरी होगा। धन की परत पर पहुंच गए उसके बाद कोई बात नहीं। फिर तो बांटते-बांटते ही रहना। बोलिये भक्तवत्सल भगवान की जय।

यह विज्ञान है, धन कमाने का। हम पहले गाँव में बहुत कथा सुनाई। वहाँ कथा सुनाने का अलग ही आनन्द है। गाँवों में घर-घर में एक कुंड बना रखे होते हैं। उस पर एक हेण्ड पम्प लगा होता है। कभी जाओ वहाँ एक बाल्टी पानी की भरी रहती है साथ में एक मग पड़ा रहता है। कभी जल्दीबाजी भी रहती है तो वो बाल्टी हरदम तैयार रखते हैं। हेण्ड पम्प चलाओ, पानी नहीं आया तो तुरन्त एक मगा पानी

भर दो हेण्ड पम्प में फिर हिलाओ, तुरन्त पानी निकल आयेगा। गाय को पिलाओ अपने पियो। समझ में आई बात, कुंड में पानी भरा हुआ है और हैंडल भी चला रहे हैं पर पानी निकल नहीं रहा है और एक लोटा पानी डाला नहीं कि बाल्टी भर के पानी निकाल गया। गाय को पिलाओ, आप पियो, आप नहाओ। ऐसे ही आपका भाग्य रूपी कुंड भरा हुआ है धन से, पैसों से, सामान से और दिन-रात मेहनत रूपी आप हैंडल भी चला रहे हो पर पानी रूपी दान नहीं डाल रहे हो, इसलिए पानी रूपी धन नहीं निकल रहा है।

कुण्ड भरा हुआ है, भाग्य आपका धन से भरा हुआ है, मेहनत दिन रात करते हो पर गोमाता को एक रुपया दान करने में कलेजा फट रहा है। इसलिए तुम अपने भाग्य के फल भी पा नहीं रहे हो। इसलिए भैया कलेजा मुक्त करो, खूब कमाओ, खूब दान करो गोमाता को। हमारे यहां मंत्र लिखा होगा, मंदिर कभी जाना सीढ़ी पर चढ़ना वहां पर मंत्र लिखा हुआ है- ''शतहस्त समाहर'' सौ हाथों से कमाओ, हजार हाथों से दान करो। उसके बाद का रुतबा देखना फिर क्या आनन्द आता है।

प्रेमियों गोसेवा हेतु पूरे देश में आपकी आवश्यकता है। हमारी और भगवान की प्यारी गोमाता सड़कों पर, गलियों में भूखी-प्यासी दर-दर भटक रही है। वो हमारी ओर देख रही है कि हम गोपुत्र उसके कष्ट कम करें। हम स्वार्थी बनकर केवल अपना परिवार पालने में और आने वाली पीढ़ियों के लिये धन संग्रह करने में लगे है, जबकि हमारे चारों तरफ जिधर देखें उधर गाय और उसका वंश पीड़ित है। भगवान ने आपके भाग्य में बहुत कुछ धन-धान्य, सुख सामग्री भर रखी है। उसको प्राप्त करने के लिये, उस परत तक पहुँचने के लिये गोसेवा में थोड़ा-थोड़ा धन लगाओ, गोमाता की पीड़ा को हरो। यही धनी होने का मूल मंत्र है।

माया क्या है, माया से कैसे बचें

माया महाठगनी हम जाने।
त्रिगुण फांस लिए कर डोले,
बोले मधुरी वाणी।
माया महाठगनी हम जाने।

माया के प्रपंच में कौन नहीं पड़ जाता है, कौन ठगा नहीं जाता है। इसके पास तीन प्रकार की रस्सियों है- सत, रज और तम। माया त्रिगुण फांस लेकर चलती है अथवा रस्सी में तीन गुण होते हैं बट लगते हैं तो उसमें तीन गुण होते हैं। बोले मधुरी वाणी- जो जिस फांसे से पकड़ में आ जाए उसको उसी में फंसा लेती है।

सतोगुण से प्राप्त साधन और सुख, रजोगुण से प्राप्त साधन और सुख, तमोगुण से प्राप्त साधन और सुख, स्वीकारोक्ति अपनी-अपनी है कि किसी को सात्विक सुख अच्छा लगता है, किसी को राजस्व सुख अच्छा लगता है और किसी को तामस सुख अच्छा लगता है। इन तीनों प्रकार के सुखों का मानो लुभाव दिखा करके यह माया जीव को बस में कर लेती है। सतोगुणी सत्पुरुष को भी धोखा दे देती है। सतोगुण से होने वाले फल लाभ आदि का उसने प्रलोभन दिया सतोगुणी व्यक्ति उपासना से हटकर सुखबुद्धि में, सुखभोग में लग जाते हैं।

रजोगुणी जीव को, रजोगुण में संसार है, संसार की उपलब्धि, समृद्धि आदि भोग पदार्थो के दर्शन करा देती है लगता है सब बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है, जो चाहा कभी वह दिख गया। इस प्रकार रजोगुण के फांस में आकर माया ने फंसा लिया।

तमोगुणी को मारना, पीटना, डांटना, जीतना, हम इसको जीत लिए, हम इसको हरा लिए, जीतना, हराना, मारना-पीटना भी क्या है? यह भी एक प्रकार की माया ही है। तमोगुणी बुद्धि के कारण हमको मारने पीटने आदि में मन लगता है उसी में जीत दिखा करके फंसा लिया। माया सतोगुणी सुख, रजोगुणी सुख, तमागुणी सुख का प्रलोभन देकर जीव को फंसा लेती है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।।

मेरी यह दिव्य शक्ति, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, उस पर विजय पाना कठिन है। किन्तु जो लोग मेरी शरण में आ जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर सकते हैं।

तीन गुणों से युक्त मेरी माया किसी को छोड़ दे यह नहीं कहा जा सकता, कोई छूट जाए यह भी नहीं कहा जा सकता, पर छूट सकता है। कौन छूटेगा? 'मामेव ये प्रपद्यन्ते' जो मेरी शरण में आ जाता है। जो मुझ पर, परमात्मा के आश्रित हो जाए जो। जो भी है, मेरे भगवान ही है। एक भरोसा एक बल एक आस विश्वास। एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।। एक भरोसा एक बल जिनके मन में निश्चित हो जाता है वो इस माया के बंधन से छूट जाते हैं। 'मायामेतां तरन्ति' इस दुस्तर माया को सहजता से तर जाते हैं।

इससे सस्ता कोई उपाय होगा? केवल स्वीकार करना है कि हम भगवान के हैं। सोते-जागते विचार मन में रहे कि हम तो भगवान के हैं, हम तो भगवान के हैं, हम तो भगवान के हैं। अपना बाल बच्चा को, अपने परिवार का कोई व्यक्ति सोते में जगाकर पूछे कि किसका बेटा है, तो वह अपने पिता का ही नाम बतायेगा। ऐसे ही सोते-जागते कभी भी कोई पूछ ले तुरन्त बताओ कि हम भगवान के हैं। ऐसा पक्का रिश्ता जब बन जायेगा तब बात बनते देर नहीं लगेगी। भगवान हमारे हैं, हम भगवान के हैं, इन्हीं विश्वास से जगत को जीता जा सकता है।

शास्त्रों के अनसुने नियम

पाद शोचम् यानि पैर धुलाना। पैर धुलाने की परम्परा नष्ट सी हो गई। पैर धोते हैं कि नहीं। हम भी बोल देते हैं कि धोकर ही आये हैं। पैर धोकर हम कब आए? कोई धुलाता तो हम धोते। तो हमारे शस्त्रों में नियम बड़े कठोर है। नल दमयंती की कथा सुनी है आपने? राजा नल थे जो घुड़ सवारी का काम बड़ा विशेष जानते थे। उन राजा ने कोई गलती नहीं की थी, उनसे गलती हो गई। इतना याद है कि राजा संध्या करने आए, पैर नहीं धोए। संध्या के आसन पर बैठने से पूर्व पैर धोना चाहिए जो नहीं धोया तो किसी अभिशाप में 12 वर्षो तक वनमें रहना पड़ा। पैर धोना जरूरी होता है, हाथ धोना जरूरी होता है, आचमन करना जरूरी होता है। तो पाद शोचम्- साधु, ब्राह्मण, गुरुजनों के पैर धोने से गोदान का पुण्य प्राप्त होता है।

यज्ञ में, ब्राह्मण भोजन आदि में परोसकारी की लड़ाई मत करो। कोई परोसे परोसने दो, पर थाली लूटने के लिए तैयार रहो कि हमको यह थाली मांजनी पर परोसने की कोई लड़ाई नहीं, पर जूठा उठाने के लिए लड़ो। जितने जूठे पत्तल उठेंगे उतना गोदान का पुण्य आपके खाते में आएगा।

आज भी मिथिला क्षेत्र में यह परम्परा जीवित है। किसी को मौका नहीं देते कि कोई सेवादार पत्तल उठा ले, वह मौका हम नहीं देते। एक पंक्ति में 40 मण दही बंट जाता है ऐसे-ऐसे भंडारे होते हैं, मगर पत्तल उठाने का मौका सेवक को मिलेगा तो फिर घर वाले क्या करेंगे? वे पांच-पांच पत्तल उठा लेंगे इतने में पूरे जगत की सफाई हो जाएगी। श्राद्ध में बेटे-बेटियों यह नहीं देखेंगे कि कितना काम किया, कोई सामान में 5 रुपया लगाया या नहीं लगाया, इस पर कोई ध्यान नहीं जाता, अगर पांच पत्तल नहीं उठाया तो अपराधी हो जाएगा।

परिवार के लोगों को जाकर पांच पत्तल तो अपने हाथ से उठाना ही है यह प्रतिबंध है। यह धर्म की व्यवस्थाएं की हुई है। हमने जूठे पांच पत्तल उठा लिए हम पांच पत्तल उठाने से उऋण हो गए ऐसा भाव मन में रखा जाता है, जूठा उठाने का महात्म्य है। जूठा उठाने से कोई छोटा नहीं हो जायेगा। अब बताओ एक भी खर्चा लगा किसी को इसमें, करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए? जरूर करना चाहिये।

युवाओं के साथ मन की बात

(पू. गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

अब मैं मेरे मम्मी-पापा की बात बताता हूं मेरे पिताजी मंगलवार को हनुमान जी के मंदिर जाते थे माताजी को साथ लेकर स्कूटर पर, तो दादा जी से अनुमति लेते थे कि मैं हनुमान जी के मंदिर जाकर आता हूं। हनुमान जी हमारे घर के इष्ट हैं, परिवार में इष्ट हैं तो दादा जी अनुमति दे देते थे कि ठीक है जाओ। हम कहते कि हम भी साथ चलेंगे तो पिताजी मना कर देते कि कोई जरूरत नहीं पढ़ाई करो। हम रोने लगते, तो कहते ठीक है चलो।

हमारे माताजी पिताजी हनुमान जी के मंदिर नहीं जाते और आसपास में कोई बगीचा होता वहाँ जाकर बैठ जाते थे। मुझे ऑरेंज आइसक्रीम पकड़ा देते। ऑरेंज जानते हैं ना बर्फ वाली आइसक्रीम जो लंबी चलती है। हमें कहते कि कहीं जाकर बैठो और आइसक्रीम खाओ, हमको शांति से बात करने दो। आइसक्रीम खा लो, घर जाकर कहना नहीं कि हम यहां गए थे। घर जाकर कहना कि हनुमान जी के दर्शन करके आए हैं और हमारे पिताजी हनुमानजी का प्रसाद पहले से ही रखते थे स्कूटर में जो घर ले जाकर सबको दे देते।

हम बैठे-बैठे अपना आइसक्रीम खाते ऑरेंज वाली लंबी चलती थी। थोड़ी देर बाद फिर हम घर आते मेरे मन में आता था उस समय कि कितने झूठे हैं, हनुमान जी का नाम लेते हैं और कहीं और जाते हैं। समझ नहीं थी तो समझ नहीं पाया कि वे ऐसा क्यों करते थे, लेकिन फिर जब समझ आई तो समझ में आया कि मेरी मां सुबह 5.00 बजे उठकर घर का काम करना शुरू करती थी जो रात को 9.00 बजे तक मशीन की तरह काम करती। क्योंकि गांव का परिवार था तो गांव से कुछ लोग आए दिन आते रहते थे। किसी के कोई गांव का आदमी अस्पताल में भर्ती है उनके लिए भी खाना मां बनाएगी। हम पांच भाई-बहन थे वह भी एक से बढ़कर एक तो हम पांचो को खिलाना पिलाना उनको स्कूल भेजना हमारे झगड़ों को सुनना, घर में सासूजी, दादीमां उनका भी सब ध्यान रखना, दादाजी गैस के चूल्हे पर बना खाना खाते नहीं तो चूल्हे पर भोजन बनाना, सुबह से लेकर रात तक वह मशीन की तरफ पचती थी तो ऐसे में अगर सप्ताह में एक दिन थोड़ा सा पिताजी के साथ ऐसा समय मिल जाए वह हनुमान जी के मंदिर से भी ज्यादा जरूरी है। यह उस समय तो समझ में नहीं आया। उस समय तो सोचता था कि ले कितने बुरे हैं हनुमान जी के मंदिर का नाम लेकर यहां आकर बैठ जाते हैं, लेकिन अब समझ में आता है कि क्यों कितना जरूरी था माताजी को थोड़ा विश्राम दिलाने के लिये।

यह बात है भाई। ऐसी चीजें हर किसी के मां-बाप की जिन्दगी में होती है। आज के ये युवा मोटिवेशनल स्पीकर और सेलिब्रिटी के पीछे दौड़ते हैं ना तो मुझे मन में बहुत विचार आता है कि ये क्या कर रही है? ये लोग क्या देने वाले हैं, क्योंकि इनकी जिंदगी में कितनी सच्चाई है? जो यह सेलिब्रिटी है उनकी जिंदगी में कितनी सच्चाई है? आप तो सिर्फ उनके सोशल मीडिया के अकाउंट में जो कुछ पेश कर रहे हैं वह देख रहे हैं। वास्तविकता आपको पता है क्या? लेकिन आपके माता-पिता की तो सच्चाई आपके सामने है। आपको उनको समझना चाहिए आपको उनको जानना चाहिए। अगर आप उनको समझते हैं, उनको जानते हैं तो मैं आपको सच कहता हूं आपको उनकी जिंदगी से ज्यादा मोटिवेट करने वाली कोई दूसरी बुक्स नहीं मिलेगी। आप लोग यह तीसरी बात इस सत्र की समझिए।

चौथी चीज है मन कैसे लगे? बहुत से लोगों ने यह प्रश्न लिखकर दिया है, कई भाइयों ने ऑनलाईन पूछा है। देखो भाई जिसमें हमारी रूची होती है उसमें मन लगता है सीधी बात है यह, मन लगने का कोई मंत्र नहीं होता है। कथा में मन क्यों लगता है मेरा क्योंकि मेरी कथा में रूची है। सीधी साधी बात है उसको मैं घुमा फिराकर कहूँ तो इसमें कुछ नहीं रखा है। पढ़ाई में इंटरेस्ट होगा तो पढ़ाई में मन अपने आप लगेगा। सार बात तो यही है। हमने अपनी रूची को तो इतना बांट रखा है कि वो कहाँ-कहाँ लगे।

एक व्यापारी की कैपिटल जिससे उसको बिजनेस शुरू करना है, वो सोचता है- क्यों नहीं 10000 शेयर में लगा देता हूं 20000 से मैं कोई दुकान खोल रहा है उसमें पार्टनरशिप ले लेता हूं, मैं थोड़ा उसमें कर देता हूं, थोड़ा इसमें कर देता हूँ। जब वह अपनी कैपिटल को इतनी जगह बांट देता है तो सोचो मुनाफे का क्या हाल होता होगा? इसमें उसको क्या बेनिफिट्स मिलता है? कहीं शेयर में पैसे डूब जाते हैं, कहीं वह दुकान चलती नहीं है, कहीं कुछ, कहीं कुछ। इस प्रकार से वह कैपिटल जो बांट देता है उसे उसकी कोई मुनाफा नहीं होता है। इतनी जगह वह ध्यान भी नहीं दे पायेगा। अगर आपको अचीवमेंट हासिल करना है तो अपना सारा इंटरेस्ट एक जगह पर लाना पड़ेगा। वह कैपिटल जो बांट देता है उससे उसको कोई मुनाफा नहीं होता है, ऐसे ही आप अपने इंटरेस्ट को भी जब बांट देते हैं थोड़ा इंटरेस्ट आपका पढ़ाई में थोड़ा इंटरेस्ट आपका दोस्तों से बात करने में, देखो भाई कोई चीज आपको हासिल करनी है, कोई लक्ष्य, कोई अचीवमेंट आपको हासिल करना है तो आपको अपना सारा इंटरेस्ट एक जगह पर लाना पड़ेगा।

अभी साल भर पहले मुझे कुछ एक काम करना था, मेरे पास एक धार्मिक प्रोजेक्ट था उसी दौरान मैंने मेरे एक मित्र को फोन पर ऐसे ही मजाक की बात कही तो मेरे मित्र ने मुझे कहा कि जब तक अपना यह प्रोजेक्ट पूरा नहीं हो जाए तब तक कोई मजाक नहीं करनी, तब तक आप बात करें तो केवल काम की बात करें, मजाक नहीं करनी है। यानी उसके कहने का मतलब था कि यदि आपने यह प्रोजेक्ट हाथ में लिया है तो आपका टोटल इंटरेस्ट इसी में होना चाहिए। आपकी पूरी की पूरी रूची एक जगह होना चाहिए।

अब मेरे एक दोस्त की सी.ए. की परीक्षा थी और उसकी मोसी उसके घर आई हुई है, वह कहीं और पढ़ रहा है लेकिन पढ़ते समय उसके मन में क्या है कि पढ़ाई पूरी करके मैं मोसी से मिलने जाऊँगा। विद्यार्थी को तो मोसी याद भी नहीं आनी चाहिए। मैं तो मोसी से भी कहूंगा कि इस समय उनको आना भी नहीं चाहिये था। चलो कोई बात नहीं मोसी है और आ गई तो लेकिन विद्यार्थी को भूल ही जाना चाहिए कि मेरी कोई मोसी भी है।

देखो विद्यार्थी जीवन एक बहुत बड़ा तपस्वी जीवन है। एक छोटी सी बात सुनाता हूँ आपको। कृपया आप लोग जैसे अभी सुन रहे हो, वैसे सुन लीजिए। गुरुकुल में पढ़ने के लिए एक लड़के को 5 या 6 साल की उम्र में घर छोड़ना पड़ता था। आप सोचो 5-6 साल के बच्चे का घर से कितना लगाव होगा, कितना जुड़ाव होगा। जिस दिन उसको गुरुकुल जाना होता था, उसके माता-पिता उसको उस रात को कहते कि देख कल सुबह तुझे घोड़े पर बिठाकर गुरुकुल भेज दिया जाएगा, खबरदार जो अगर तूने पीछे मुड़कर देखा तो। अगर तूने पीछे मुड़कर देखा तो यह हमारे लिए सबसे शर्मनाक बात होगी। क्योंकि तेरा पीछे मुड़कर देखना इस बात का प्रतीक होगा कि तूं कमजोर हो गया है, तूं गुरुकुल नहीं जाना चाहता है और हम नहीं चाहते कि हमारा बच्चा अपने अध्ययन के लिए जाते समय कमजोर हो। तूने अगर पीछे मुड़कर देखा तो यह इस बात का प्रतीक होगा

कि तेरा मन तो अभी घर में ही पड़ा है, माता-पिता में पड़ा है। इसलिए खबरदार एक बार भी पीछे मुड़कर देखा तो। फिर जब तूं गुरुकुल में पहुंचेगा तो जरूरी नहीं है कि जैसे तूं खेलकर घर में आता है तो तेरी मां तुझे हाथ पकड़कर बैठा लेती है और कहती है कि ले बेटा भोजन कर ले, ले बेटा दूध पी ले, वहाँ ऐसा कहने वाला कोई नहीं रहेगा। जब तक गुरु जी अंदर ना बुलाए तब तक दरवाजे पर खड़ा रहना जब वे बुला ले तो ही अंदर जाना। फिर अंदर जाने पर वे कहे कि यहां बैठ जाओ तो वहां बैठ जाना और जब हमको यह सूचना मिलेगी कि गुरुजी ने तुमको गुरुकुल में प्रवेश दे दिया है, वह हमारे लिए सबसे बड़ी गौरव की बात होगी।

वह 5-6 साल का बच्चा सुबह-सुबह घर से निकलता है, ना उसकी मम्मी मिलती है ना उसको पिताजी मिलते हैं। अकेला घोड़े पर बैठता है। एक आदमी साथ में चलता है और बहुत मन करता है कि मैं मुड़कर एक बार माँ को देख लूं, एक बार मुड़कर पिता को देख लूं लेकिन उसको अनुमति नहीं। ऐसा विद्यार्थी जीवन हुआ करता था पूर्व में हमारे देश के बच्चों का। यह नर्सरी प्राइमरी वाला नहीं कि बेग कुकीज से भरा हुआ है, स्नेक से भरा हुआ है। जाओ स्कूल में खेलो, कूदो, खाओ। लेकिन क्षमा करना विद्यार्थी जीवन की शुरूआत ही आज के समय में सबसे खराब होती है। यह विद्यार्थी जीवन की शुरुआत है? बेग में बिस्किट भरे हैं, कुकीज भरे हैं, आलू की चिप्स भरे हैं, वह जो खेलो और खाओ, कुकीज खाओ, कुरकुरे खाओ, अंग्रेजी में पोयम बोलो। आज विद्यार्थी जीवन की शुरूआत ही ऐसी होगी तो आगे क्या परिणाम आयेंगे? वे जिन्दगी भर स्नेक्स और कुकीज ही खाते रहते हैं, उनकी जिन्दगी कुक्कर बन जाती है।

खैर, घोड़े पर बैठे-बैठे उसका बहुत मन करता है कि एक बार तो मैं पीछे मुड़कर माँ को देख लूं, एक बार तो मैं पिता को देख लूँ। लेकिन उसको बार-बार अपने माता-पिता के बोल याद आते हैं कि तुमने पीछे मुड़कर देख लिया तो यह मान लिया जायेगा कि तुम कमजोर पड़ गये हो और यह हमारे लिए सबसे शर्म की बात होगी। वह बच्चा अपने मन को कठोर करके चलता है, गुरुकुल में पहुँचता है, बहुत देर तक दरवाजे पर खड़ा रहता है, टांगे दुखने लगती है। सुबह उठकर के आया है जल्दी, घोड़े पर बैठ कर आया है, घोड़े पर भले ही आदमी बैठे पर टांगें लटकती है, बहुत दर्द होता है और फिर जब वहाँ गुरुजी का ध्यान जाता है, गुरुजी एक पेड़ के नीचे बिठा देते हैं- बैठ जा बेटा और वह एक पेड़ के नीचे बैठ जाता है और पेड़ के नीचे जब वह बैठ जाता है गुरुजी कहते हैं आँखें बंद कर ले, बंद रखना।

थोड़ी देर में गुरुकुल के विद्यार्थियों के लिए मध्यांतर होता है। गुरुकुल के बच्चे कबड्डी-कबड्डी -कबड्डी खेल रहे हैं। एक 5-6 साल का बच्चा कैसे अपने आप पर नियंत्रण करता है सोचो आप। आज 20 साल के, 18 साल के विद्यार्थी जब क्रिकेट मैच होता है तो अपनी पढ़ाई छोड़कर वहां क्रिकेट मैच देखने बैठ जाते हैं। जिस वर्ष परीक्षा के दिनों में क्रिकेट मैच होते हैं, उस वर्ष रिजल्ट बिगड़ जाता है। आज के विद्यार्थियों का यह हाल है।

खैर अब वह छोटा सा बच्चा और उसके आसपास कबड्डी की यह सब आवाजें आ रही है, लेकिन उसको याद आती है अपने माता-पिता की बात कि मेरे माता-पिता ने कहा था- अगर तुझे गुरुकुल में प्रवेश नहीं मिला तो इससे बढ़कर हमारे लिए शर्म की कोई बात नहीं होगी और वह अपने आप पर नियंत्रण रखता है। थोड़ी देर में मिठाइयाँ बंट रही है गुरुकुल में और गुरुजी जानबूझकर उसके आसपास मिठाइयाँ बंटवाते हैं और बच्चा मन ही मन सोचता है कि जलेबी कितनी स्वादिष्ट है, लड्डू कितने स्वादिष्ट है, यह पकौड़ी..शेष अगले अंकमें

गोकृपा कथा

पू. ग्वालसंत श्री गोपालानंद सरस्वतीजी महाराज

निराश्रित गोवंश की व्यथा

आज 31 दिसम्बर है, वर्ष का अंतिम दिन है। आज हम कोई प्रवचन या कथा नहीं कहेंगे,आज सिर्फ हम आपस में गोमाता के कष्टों की चर्चा करेंगे, क्योंकि आज मंथन का दिन है की 1 जनवरी से लेकर के 31 दिसंबर तक हम लोगों ने किया क्या? कितनी गोसेवा की? कितने अच्छे काम किये? कितने लोगों को गोव्रती बनाया? कितने लोगों के घरों में गैया बंधवाई? यह हिसाब करने का दिन है। आज चर्चा करेंगे कि इनमें से कितने कार्य नहीं हुए, उनको अगले वर्ष में पूरा करें।

आगर-सुसनेर की सड़कों पर जितने छोटे-छोटे बछड़े घूम रहे हैं वे सब गोशाला में आ जाए यह इरादा था, लेकिन समस्या यह हो गई कि इनको रखें कहाँ? मेरे ख्याल से यह पहली ऐसी गौशाला होगी जहां पर यज्ञशाला में भी गाय माता को बांध दिया और घास गोदाम में भी गाय माता को बांध दिया। बाहर तो कैसे रखें, जो गो अभयारण्य में आ गई है, उनको तो ठण्ड में बाहर खुले में कैसे रखें। हमारे पंडितजी कह रहे थे यह कि यज्ञशाला की लिपाई सारी टूट जायेगी, सारे यज्ञ कुण्ड टूट जाएंगे तो फिर क्या करेंगे? नये बनायेंगे और क्या करेंगे। गोमाता को कष्ट नहीं होना चाहिए हमारा लक्ष्य तो यही रहना चाहिए।

डॉक्टर साहब गोमाता अभी कुछ गोदाम में है और कुछ यज्ञशाला में है। इनके शेड की स्थाई व्यवस्था का अब हम लोगों को ही मिलकर के प्रयास करना पड़ेगा, क्योंकि आप इस जिले के संयुक्त संचालक हैं। आप ही को प्रशासन को कहना पड़ेगा कि वह शीघ्रतापूर्वक जो शेड की कमी है उनको पूरा करके दें ताकि कम से कम आने वाली शीत ऋतु में तो आगर क्षेत्र की कोई गाय माता सड़क पर ठंड से परेशान ना हो।

हम लोग शॉल ओढ़कर आये है, टोपा बंदे हैं। हमारे पास एक चिट्ठी भी आई है कि आप शॉल ओढ़ लीजिए। किसी शुभचिंतक ने कहा है कि महाराज जी ठंड बहुत है, आप भी शॉल ओढ़ लीजिये। हाँ, लेकिन मैं भी ओढ़ने के लिये शॉल लाया था, मगर केशव गोवत्स बाबा ने नीचे दबा दी। ठंड तो लगती है ना इस शरीर को भी, लाया लेकिन यह गोवत्स बाबा ने अपने नीचे दबा दी, निकालने नहीं दे रहे हैं कि गोपाला मेरे जैसे अनेकों अनेक सड़क पर ठंड से तड़प रहे हैं और तू इधर ओढ़कर के बैठेगा, शर्म नहीं आती है तुझे। इसलिए इन्होंने अपने नीचे दबा रखी है।

कितने बछड़े सड़क पर ठंड से कांप रहे हैं, आप लोगों के मन में विचार आया? हर गांव में है। शॉल नहीं हैं तो बोरी के टाट बांध दो। अगर एक-एक छोटे बच्चों को एक-एक परिवार अपने घर में ले आए और 2 महीने ठंड-ठंड में अपने घर में जगह दें तो क्या परेशानी है महाराज लंका थोड़े ही लुट जायेगी। मध्य प्रदेश की आबादी 9 करोड़ और मुश्किल से कोई लाख दो लाख बछड़े सड़क पर होंगे। क्या 2लाख बछड़ों को हम लोग अपने घर नहीं ला सकते? क्या ले लेगा एक छोटा बछड़ा हमारा? अगर बहुत ज्यादा छोटा है और उसकी मां के दूध नहीं है तो थोड़ा सा दूध ही तो पिलाना है। क्या परेशानी है उसमें पिला दीजिए ना। उसकी मां को भी साथ में अगर रखना पड़े तो क्या परेशानी है, हम 2 महीने के लिए ऐसा नहीं कर सकते क्या? परसों के दिन एक सूचना आई थी कि यात्रा चल रही है वहाँ की सड़कों पर बहुत सारे बछड़े घूम रहे हैं छोटे-छोटे। क्या बीत रही होगी उन पर अभी? ऐसा

नहीं लगता है कि हमारा मानव मर चुका है हमारे अंदर से? जिस देश में शीतकाल में जिस घास के ढ़ेर में कुतिया बच्चों को जन्म दे देती है ना तो लोग उस घास के ढेर को नहीं हिलाते हैं। अगर चारा नहीं होता है तो खरीद कर गायों को डालते हैं कि भाई कुत्ते ने बच्चे दे रखे हैं ठंड से परेशान हो जाएंगे, इस घास को हिलाना नहीं है, उस देश में सड़क पर गैया जिसको मां कहते हैं उसके बछड़े ठण्ड से ठिठुर रहे हैं और हम लोगों को कोई परवाह नहीं, हम लोग कोई चिंतन नहीं कर सकते, हम लोग कोई विचार नहीं कर सकते।

यह समस्या ही नहीं है सबसे बड़ी बात तो इसको समस्या के रूप में देखना पड़ रहा है। यही पीड़ा की बात है भाई। इतने हिंदू जितने लोग रोज गिरिराज जी को परिक्रमा लगा रहे जितने लोग रोज खाटूश्याम जी जा रहे हैं, जितने लोग रोज तिरुपति बालाजी में धोक लगा रहे हैं, उतने बछड़े भी सड़कों पर नहीं है। अरे भाई! एक दिन के भक्त भी अगर एक-एक बछड़े को अपना ले तो सुख मिल सकता है। पता नहीं क्या चाहते हैं हम लोग, पता नहीं क्या विचार है हम लोगों का?

आज 31 तारीख है इस वर्ष की अंतिम तारीख है। देना पड़ेगा हम लोगों को उत्तर देना पड़ेगा? आप लोग जो सामने बैठे हैं अथवा आप लोग जो टीवी से कथा सुन रहे हैं, मेरी हाथ जोड़कर आप सभी लोगों से प्रार्थना है कि आजकल आपके लिए नया साल आ रहा है, हमारे लिए तो रोज ही नया साल है, तो आपके इस नये साल को सचमुच में कुछ नया बनाना है। आज ही, आज रात पड़े उससे पहले एक छोटे बछड़े को अपने घर में जगह दे दीजिए। आप हमेशा नहीं रख सकते तो कोई बात नहीं सिर्फ दो महीने की बात है, 2 महीने आप सर्दी-सर्दी में उसे आश्रय दे दीजिये?। पूरी रात ओस टपकती है, कभी आधा घंटा रात बाहर गुजारकर के देखना कितनी ठण्ड लग रही है? क्या हो गयाहै इसदेश को यह भी समझ में नहीं आता। किस दिशा में जा रहे हैं हम लोग, यह भी समझ में नहीं आता? क्या करना चाह रहे हैं हम लोग, यह भी समझ नहीं आता? कैसे हमारे अंदर का राम हमें इस बात की स्वीकृति दे देता है कि हम चुपचाप यहसब देख लें और सह लें? क्या हो रहा है यह सब इस देश में?

इतनी भी करूणा और दया मन में नहीं ले पाये तो हमें अपने आप को भक्त कहलाना तो दूर मानव कहलाने पर भी विचार करना पड़ेगा। मानव कहलाने के लिये भी विचार करना पड़ेगा कि क्या हम मानव है कि नहीं? गोमाता कितनी चिन्ता करती है हमारी, हम तो कल यह समाचार सुनकर के बहुत व्यथित हो गये कि इस ठण्ड में नन्हें-नन्हें बछड़ों को लेकर कैसे गोमाता भूखी-प्यासी इस भयंकर ठण्ड में ठिठुरती हुई, हिंसक जानवरों से अपने वत्सों को बचाते हुए रात गुजारती होगी?

हम लोग तो भाई इंसान हैं, पृथ्वी पर जितनी कलाएं हैं उनमें सर्वाधिक कला मनुष्य को मिली है। अगर फिर भी हम अपनी उसे सद्कला का उपयोग न कर पाए और गोमाता की सेवा न कर पाए, बड़ी सेवा मत करो कोई बात नहीं, आपको पता है कि शीतकाल में भूख भी अधिक लगती है, क्या खाती होगी सड़क पर गाय कुछ तो सोचा होता हम लोगों ने? आपका आना और हमारा सुनाना दोनों ही तभी सार्थक है जब आज घर जाकर के खुद सोने से पहले एक गाय या एक बछड़ी को सड़क से आप अपने घर में ले आएं। इसी में सार्थकता है, इसी में आपका इस कथा में पधारना सफल है। जिनके घर पर व्यवस्था नहीं है, जगह की कमी है वे एक गैया मैया को किसी गौशाला में ले जाकर सौंप दे और कह दे कि इसको यहाँ रखो, चारा मैं भेजता रहूंगा। कुछ तो करना भाई, कुछ तो करना। हम आप लोगों का मन नहीं दुखाना चाहते थे लेकिन यह पीड़ा

दो-तीन दिन से हमें परेशान कर रही थी और अभी बातों ही बातों में पीड़ा होठों पर आ गई। हम नहीं चाहते थे कि आपको दु:खी करें क्योंकि आपके जीवन में पहले ही बहुत दु:ख है और हम आपको किसी भी दृष्टिकोण से दु:खी नहीं करना चाहते थे। कुछ बात होती है बहुत अधिक पीड़ा देने वाली, वो ही थी जो आपके समक्षप्रकट कर दी।

हमारे करीबी मित्र, हमारे करीबी रिश्तेदार संसार छोड़कर के गए कोई आकार के हमें खबर देता है कि वह मर गए तो हमको कोई फर्क नहीं पड़ता है, बस हम हाथ जोड़कर के कह देते हैं कि ठीक है उनके कर्मो के अनुसार उनको उचित लोक मिले। हम यह भी नहीं कहते कि भगवान उनको अच्छा लोक दे। हम कैसे कह सकते हैं लेकिन जो स्थिति हमारे है वर्तमान में हमारी भावनाओं की है हमारे विचारों की है उसे देखकर लगता है कि भारत मर जाएगा। भारत से अगर प्रेम करना है तो हम लोगों को अपने हृदय में फिर से गाय माता के प्रति प्रीति जगानी पड़ेगी, प्रेम जगना पड़ेगा।

आप ठीक आए डॉक्टर साहब त्रिवेदी जी हमारी पीड़ा को आप प्रयत्न करके आज ही भोपाल पहुंचाइये। एकदम आज ही पक्के ृशेड नहीं बन सकते हम भी समझते हैं। तिरपाल की व्यवस्था कर दीजिए, कच्चे ृशेड ही बनवा लेंगे। हम एक सप्ताह में संख्या को 6000 से 10000 करने के लिए तैयार हैं। कुछ व्यवस्था करवा दीजिए ताकि गैया मैया का और हमारा यह दु:ख मिट सके।

गोकथा करवाने का फल

अग्नि पुराण के 292 अध्याय के 5 वे श्लोक में भगवान अग्नि देव कहते हैं कि जो कोई गोकथा करवाता है, जो कोई गोकथा करता है और जो कोई गोकथा सुनता है उसके पूरे कुल का उद्धार हो जाता है। गोकथा करवाने का बड़ा भारी महात्म्य है।

प्रकृति को दोगे,वो ही लौटाएगी

अभी कोरोना की दूसरी लहर आई, करोड़ों बीमार हुए लाखों गए। उनको कफन तक नसीब नहीं हुआ, पॉलिथीन में लिपट कर गए। हालांकि उसके पीछे हमारी अपनी गलती है। इस प्रकृति का नियम है कि उसे जो हम देते हैं वही हमें लौटकर मिलता है। अगर आप किसी हॉल में जोर से राम बोलोगे तो क्या सुनाई देगा? राम ही सुनाई देगा। गाली दोगे तो गाली ही सुनाई देगी। हम जो देते हैं वही हमें प्राप्त होता है, चाहे प्रकृति को दो चाहे पुरुष को दो। आप किसी आदमी को गाली बोल कर देखो वह भी गाली देगा। उसको आप एक बार राम-राम बोलोगे तो वह चार बार राम-राम बोलेगा। आप उसको आप बोल दो तूं चोर है तो वो चार बार बोलेगा तूं चोर, तेरा बाप चोर, तेरा दादा चोर, तेरा खानदान चोर। बस यही वस्तु प्रकृति के साथ लागू होती है। हम जो प्रकृति को देते हैं प्रकृति हमें वही लौटाती है।

15-20 वर्षो में हमने प्रकृति को बहुत पॉलिथीन दिया। बाजार से सब्जी खरीद कर जो कैरी बैग लिया उसे सब्जी निकालकर सड़क पर फेंक दिया, गुटका, जर्दा खाया उसका पाऊच सड़क पर फेंक दिया, बिस्किट, नमकीन खाया उसका पैकिंग सड़क पर फेंक दिया। वर्षो से हम पॉलिथीन फेंकते रहे, फेंकते रहे, आखिर प्रकृति थक गई और कोरोना काल में वही पॉलिथीन कफन के रूप में हमारे शरीर पर लिपटा कर प्रकृति ने हमें वापस किया। इतना भयंकर वातावरण रहा। सब लोग डरे हुए थे, सहमे हुए थे, कब किस घर से अर्थी उठ जाए कह नहीं सकते, लेकिन आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि इतने भयंकर वातावरण में भी हमारी जितनी गौशालाएं हैं उनमें करीब 3500 से अधिक ग्वाले कर्मचारी हैं, किसी भी कर्मचारी को खांसी तक नहीं आई, छींक तक नहीं आई, कोरोना होना तो दूर की बात है। गो के संपर्क में रहने मात्र से मनुष्य निरोगी रहता है।

श्री भक्तमाल कथा

(पूज्य श्री मुकुन्दप्रकाश जी ब्रह्मचारी)

पिछले अंक से आगे...मूल गुजराती से हिन्दी रूपान्तरण

नारायण इसी गोबर से पूरे भारत में खेती होती थी युगों युगों से और यह गोबर यानि लक्ष्मी है और लक्ष्मी के प्रभाव से हमारे किसानों के भंडार भरे रहते थे। यह भारतवर्ष अनाज के भंडार से भरपूर था। स्वर्ण से भरपूर था। गोसंस्कृति से यह भारत सम्पन्न था। राजा दिलीप को श्राप लगा है, गुरु वशिष्ठ के पास आए, प्रणाम किया है। हे गुरुदेव, मेरा वंश अटक गया है। वशिष्ठजी ने अंतर ध्यान होकर देखा है और कहा है- हे राजन, आपने कामधेनु गोमाता को प्रणाम नहीं किया, इससे आपको यह श्राप लगा है। गुरुदेव, आप समाधान बताओ। कृपा करो जिससे मेरा यह वंश आगे बढ़े।

गुरु वशिष्ठ जी ने कहा- यह कामधेनु गोमाता की पुत्री नंदिनी गोमाता जो मेरे पास है, तुम इसकी सेवा करो। तुम्हारा वंश आगे बढ़ेगा। निष्ठापूर्वक सेवा करना, जैसे-जैसे गोमाता करे, वैसे-वैसे तुम भी करना। जहाँ गाय सोये, वहाँ तुम विश्राम करो, गोमाता चरे जब तुम भोजन करो, गोमाता पानी पिये तब तुम पानी पीना और गोमाता के दूध का आहार लेना। राजा दिलीप ने गुरु की आज्ञा मानकर जैसा कहा वैसे ही नंदिनी गोमाता की सेवा प्रारंभ की। नंदिनी गोमाता की सेवा करते-करते राजा दिलीप गो भक्तिमय बन गए हैं और श्री हरि ने एक बार लीला की और व्याघ्र का स्वरूप धारण किया और राजा दिलीप की नंदिनी गोमाता पर हमला किया है। तब राजा दिलीप ने व्याघ्र से नंदिनी गोमाता को नहीं खाने की प्रार्थना की। राजा ने कहा- नंदिनी गोमाता को छोड़ दो, मेरा भक्षण कर लो। तब श्री हरि प्रसन्न हुए हैं और प्रकट हुए। राजा दिलीप को आशीर्वाद दिया है कि तेरी गोसेवा से, तेरी गो के प्रति निष्ठा से मैं प्रसन्न हुआ और तुम्हें यह वरदान दूँगा कि तेरा वंश आगे बढ़ेगा। उसी वरदान से राजा दिलीप के कुल में रघु हुए और वही रघु के वंश में भगवान श्री रामचंद्र जी हुए। अर्थात भगवान श्री रामजी के पूर्वज गोमाता की कृपा से ही इस धरती पर प्रकट हुए हैं। रामजी का भी इस धरती पर आने का कारण गोमाता की कृपा है। यदि गोमाता की कृपा राजा दिलीप पर न हुई होती तो रघु प्रकट न हुए होते और रघु प्रकट नहीं होते तो रघुवंश में श्रीराम नहीं हुए होते।

हमारे पूर्वजों ने एक-एक गोमाता के प्राण बचाने के लिए अपना बलिदान दिया है, अपना बलिदान दिया। पाथाजी महाराज गुजरात में, राजस्थान में वीर गोगाजी, वीर तेजाजी, वीर पाबूजी, अनेका अनेक वीर महापुरुष हुए हैं भारत में जिन्होंने मात्र गोमाता के लिए अपना बलिदान दिया है। हमारे पूर्वजों ने गाय को बचाने के लिए अनेकों बलिदान दिये, कई संगठनों ने कार्य किये, आज भारत की स्थिति क्या है, विचार करें। गोमाता को हृदय में धारण करो। बहुत कृपा होगी।

मैंने तो कई लोगों को देखा है, उनके बारे में मैं आपको परिचय दूँगा। पथमेडा गोधाम में पूरे भारतवर्ष से लोग आते हैं कि बापजी, सदगुरुदेव पथमेडा महाराज से प्रार्थना करते हैं कि मेरे घर में आगे वंशवाला नहीं है। तब बापू कहते हैं कि भाई, गोमाता की पूजा करो, गोमाता की श्रद्धापूर्वक सेवा करो और जो माँग हो, वह तो इस समृद्धि गोमाता के कान में कह दो। गोमाता अवश्य पूरी करेगी।हमने ऐसे-ऐसे उदाहरण देखे हैं कि जिन्हें डॉक्टरों ने भी ना कह दिया था कि आपके घर अब कुलदीपक नहीं हो सकता, कोई योग नहीं है। ऐसे-ऐसे उदाहरण हैं कि उनके घर में गोमाता की कृपा से बेटों का जन्म हुआ है कृपानाथ। श्री गोधाम महतीर्थ पथमेडा, यह

कोई गोशाला नहीं, बल्कि गोसंस्कृति को इस धरती पर स्थापित करने के लिए एक महा अभियान है कि भारतवर्ष के लोग गोमाता से जुड़ें, लोगों के हृदय में गोमाता स्थापित हो और गोमाताको कोई कष्ट न रहे।

श्री पथमेडा गोधाम की महिमा मैं आपको शब्दों में कहूं इससे अच्छा होगा कि आप सभी से मेरी प्रार्थना है एक बार आप श्री गोधाम महातीर्थ पथमेडा पधारें और वहाँ के प्रत्यक्ष दर्शन करें। लाखों गायों की सेवा इस प्रकार होती है कि घर के आँगन में तो कहीं आपको कचरा देखने को मिल भी जावे कदाचित परंतु श्री पथमेडा गोधाम में हजारों गायों के मध्य में आपको कहीं प्लास्टिक, कचरा आदि देखने को नहीं मिलेगा। ऐसी अद्‌भुत सेवा है वहाँ और घर में पांच गायें हैं भी होती है कई जगहों पर थोड़ी-बहुत थकी हुई गायें होती हैं, पर वहाँ सभी गायें ऐसी मजबूत है कि देखते ही बनता है। संस्थाओं पर चाहे जितनी भी आर्थिक संकट हो, लेकिन गोमाता को खिलाने में कोई वहाँ कमी नहीं।

प्रतिदिन लाखों रुपये का चारा, पौष्टिक आहार, दान औषधि वहाँ गोमाता को अर्पित किया जाता है।परम् श्रद्धेय गोऋषि पथमेड़ा महाराज जी जिनका पूरा जीवन ही गोमय है, केवल गोमाता का संबंध है। उनकी दृष्टि कहीं अन्यत्र नहीं। महाराज जी तो कहते हैं कि मेरे ठाकुरजी यहीं है, कन्हैयाजी की पूजा, शिवजी की पूजा, सभी इसमें हो जाती हैं। दिन-रात इसी का चिन्तन कि भारतवर्ष में गायों का कष्ट किस प्रकार मिटे? इसी चिंता में रहते हैं कि गोमाता सुखी कैसे हो और इसके लिए ही पूरा जीवन है। आज हम सभी एकत्रित हुए हैं, तो इसके मूल में भी परम् श्रद्धेय पथमेड़ा महाराज की प्रेरणा ही है। आज गोसंस्कृति और गो परंपरा हम सभी को बताने वाले कौन हैं? हम लोग गाय की महिमा इतनी नहीं जानते। ये योगेशदासजी महराज यहाँ बैठे हैं। पिछले चार वर्षो से आते हैं और देखते हैं कि गोसंस्कृति के सजीव दर्शन पथमेड़ा में होते हैं। भगवान का जितना महत्व है, उतना ही महत्व यहाँ गोमाता का है। जहाँ तक हमें समझ में आया, गाय की उपमा केवल और केवल भगवान के साथ की जा सकती है। अन्य किसी के साथ नहीं हो सकती। परम्श्रद्धेय पथमेड़ा वाले महाराज जी जो कभी फोटो नहीं खींचवाते हैं। उनका नियम है कि कभी जीवन में फोटो नहीं खींचवाते और कभी लोक व्यवहार नहीं करते। कोई कहते हैं कि महाराज जी मेरी फैक्ट्री में, घर में, पगले करो, ऐसा व्यवहार नहीं करते हैं। क्योंकि बापू का कहना है कि आपके घर यदि गोमाता है, गोमाता की भाव से सेवा होती है तो वो हमारा आना हो गया। अपनी फेक्ट्री, घर, दूकान, कार्यालय में गोमाता के पगले करो। अपने को बड़ा मानकर किसी के घर कदम रखने के लिए कहीं कदम रखने का ऐसा कोई उनका भाव और जीवन नहीं है। ऐसे विलक्षण महापुरुषों की कृपा से आज हम यहाँ हैं।

पूज्या गोमाता के प्राक्टय की अनेक कथाएं शास्त्रों में आती है। गोमाता कैसे प्रकट हुई? गोमाता के प्रकट होने का क्या कारण था? जब सृष्टि का निर्माण हुआ तो ब्रह्माजी ने सृष्टि का संचालन कैसे हो, इसके लिये तप किया। यह तप इतना बढ़ गया कि ब्रह्माजी तप को सहन नहीं कर सके और इसी तप से एक दिव्य, अद्‌भुत प्राणी प्रकट हुआ यही जगत जननी गोमाता का प्रकटीकरण था। बोलिये गोमाता की जय। एक कल्प में तो ब्रह्माजी के तप से गोमाता प्रकट हुई। तेतरीय ब्रह्मण ग्रन्थ में गऊ माता के प्राक्टय की कथा आती है। शस्त्रों में एक जगह लिखा है कि जो नित्य होम करते हैं, जो नित्य अग्निहोत्र करते हैं वह गाय है। या कहें कि गाय को नित्य ग्रास देने से यज्ञ हो जाता है। गोमाता को लोग हरा चारा क्यों देते हैं? कारण कि गोमाता अग्नि में से प्रकट हुई है। ब्रह्माजी की आज्ञा से प्राण देवता, वायु देवता, आदित्य देवता ....शेष अगले अंक में

श्रीमद्भागवत कथा

(गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज)

.....पिछले अंक से आगे

वे सुखदेवजी कैसे हैं? जिनका अभी कोई संस्कार हुआ नहीं। जन्म संस्कार होता है, नामकरण संस्कार होता है, यज्ञोपवित संस्कार होता है, विवाह संस्कार हुआ है कोई भी संस्कार नहीं हुआ है। जन्म लेते ही वे जंगल की ओर प्रस्थान कर लिए हैं। भगवान वेदव्यास अपने पुत्र के पीछे-पीछे जाते हैं। इकलौते पुत्र हैं वही बड़े वही छोटे तो मोह तो रहता ही है। अपने पुत्र के पीछे-पीछे जा रहे हैं और कह रहे हैं- बेटा! तब सुखदेव जी तो कोई जवाब नहीं देते परंतु वृक्ष उनकी ओर से बोलते हैं, सुखदेव जी की ओर से वृक्ष जवाब दे रहे हैं। ऐसे सर्वभूतहृदय श्री सुखदेव जी को प्रणाम है, नमस्कार है। सर्वभूतहृदय कौन है? केवल एक परमात्मा है जो सबभूत प्राणियों हित में रत हैं। फिर सुखदेव जी को सर्वभूतहृदय क्यों कहा गया? क्योंकि यहां सुखदेव जी साक्षात् भगवत स्वरूप है, भगवान ही है।

एक बार की बात है, सभी शौनकादि ऋषि नैमिषारण्य में विराजमान हैं। ये शौनकादि 88000 ऋषि नित्य निरंतर भागवत चर्चा करते रहते हैं। ये बहुत दीर्घ जीवी हैं, उनके सामने न जाने कितने युग बीत गए, ऐसे कैसे क्यों क्योंकि ये प्रतिदिन सत्संग करते हैं। सत्संग का आश्रय लिए हुए हैं। इसलिये इन पर आयु के जो वर्ष हैं वे नहीं चलते है। इन शौनकआदि ऋषियों के बीच में सूतजी पधारे है वे 20 वर्ष की आयु के हैं। सभी ने खड़े होकर हाथ जोड़कर नारायण हरि नारायण हरि करके उनका स्वागत किया है। और एक ही निवेदन किया कि आप हमें सत्संग सुनाइए। हर किसी के मन की अभिलाष होती है, कोई कार्य हम लोग करते हैं तो उसके पीछे कोई ना कोई हेतु होता है। सूतजी ने कहा- ऋषियों आपको कुछ तो चाहिए नहीं है, कोई धन की इच्छा नहीं, कोई पुत्र की इच्छा नहीं, क्यों सुनना चाहते हैं सत्संग? शौनकादि ऋषियों ने कहा-

इह घोरे कलौ प्रायो जीवश्चासुरतां गतः।
क्लेशाक्रान्तस्य तस्यैव शोधेने किं परायणम्।

यह भयंकर कलिकाल है, इसमें जीव जो है वह असुरता को प्राप्त हो रहा है। इसलिए हे प्रभु! जिससे ज्ञान, भक्ति और वैराग्य बढ़े ऐसी हमको बात बताइए। जिससे वैष्णव लोग यह जो माया का पर्दा है उसे हटा सके। जो श्रेष्ठों में श्रेष्ठ हो, पवित्रों में भी जो पवित्र करने वाला हो और भगवान श्री कृष्ण की प्राप्ति कराने वाला हो ऐसा साधन आप हमको बताइए।

सूतजी महाराज कहते हैं- हे शौनकादि ऋषियों मैं आपको संपूर्ण सिद्धांतों का सार जो जन्म-मृत्यु के चक्कर को मिटाने वाला है वह साधन तुम्हें बताता हूं, तुम लोग सावधानीपूर्वक सुनिए। यह जो काल रूपी व्याल है यह निरंतर हमारी आयु को कम कर रहा है। हम सब म्रियमाण हैं 'म्रियमाण्स्य सर्वथा।' जब परीक्षित जी ने प्रश्न किया है तो वहाँ मरने वाले व्यक्ति को क्या करना चाहिए यह कहा, यह नहीं कहा कि मैं मर रहा हूं इसलिए मुझे क्या करना चाहिए? इसलिए जो परीक्षित जी का प्रश्न है वह हम सबका प्रश्न है। म्रियमाण में शानच् प्रत्यय है, तो हम लो सब मृत्यु की ओर निरंतर अग्रसर है। क्योंकि कोई 20 का हो गया तो 20 कम हो गया, कोई 25 का हो गया तो उसकी 25 वर्ष कम हो गई अर्थात मरने वाले व्यक्ति को क्या करना चाहिए और सब मरने वाले हैं। सबके पीठ पर काल बैठा हुआ है किसी को नहीं दिखता है।

एक संस्कृत में श्लोक है-

भेको धावति तं च धावति फणी सर्प शिखी धावति,
व्याघ्रो धावति केकिनं विधिवशाद् व्याधोऽपि तं धावति।
स्वस्वाहारविहारसाधनविधौ सर्वे जना व्याकुलाः,
कालस्तिष्ठति पृष्ठतः कचधरः केनापि नो दृश्यते।।

मेंढक दौड़ रहा है, उसके पीछे सर्प दौड़ रहा है, सर्प के पीछे मयूर दौड़ रहा है, मयूर के पीछे बिल्ली दौड़ रही है, बिल्ली के पीछे कुत्ता दौड़ रहा है, कुत्ते के पीछे भेड़िया दौड़ रहा है, भेड़िये के पीछे सिंह दौड़ रहा है और सिंह के पीछे शिकारी दौड़ रहा है । इस प्रकार अपने अपने भोजन और विहार की सामग्रियों के पीछे सभी व्याकुल हो रहे हैं। पर शिकारी के पीछे जो सबकी चोटी पकड़कर काल (मृत्यु) खड़ा है, उसको कोई नहीं देख रहा है। इसलिए ऋषियों-

कालव्यालमुखग्रासत्रासनिर्णाश हेतवे।

श्रीमद्भागवतं शास्त्रं कलौ कीरेण भाषितम्।।

काल रूपी महान सर्प का ग्रास बने हुए प्राणियों की दुख की निवृत्ति के लिए कलिकाल में श्री शुकदेव जी ने मुझे अपना शिष्य मानकर श्रीमद्भागवत कथा मुझे दी थी वह मैं तुम्हें सुनाता हूँ। इससे बढ़कर के मन की शुद्धि का और कोई उपाय हो ही नहीं सकता

जब श्री परीक्षितजी महाराज को ब्रह्मज्ञानी सुखदेव जी जब भागवत जी सुनाने लगे हैं तब सभी देवता वहाँ गंगा तट पर आए और बोले कि श्री परीक्षित जी की मृत्यु होनी है 7 दिन पश्चात इसलिए इनको जीवन चाहिए और हम लोगों को आप कथा सुधा पिला दीजिए तो ऐसा परस्पर का विनिमय हो जाएगा जिससे हम लोग श्रीमद्भागवत जी की कथा सुन लेंगे और परीक्षित जी को अमरता का वरदान प्राप्त हो जाएगा। अमृत पियेंगे तो अमर हो जाएंगे। तब सुखदेवजी हंसे उन देवताओं पर- अरे देवताओं! बड़े पद पर बैठे हो परंतु तुम सब मूर्ख हो। तुम लोगों को तुलना करनी भी नहीं आती। अरे देवताओं! तुम कहाँ अमृत की और कहाँ कथा की तुलना कर रहे हो। यह तो ठीक ऐसे हो गया कि कांच की तुलना मणी से की जा रही है। देवताओं को भी अभक्त मान करके सुखदेवजी ने यह विद्या उनको नहीं सुनाई। यह हमें उनके अनन्य भक्त बना करके उनसे श्रीमद्भागवत जी की कथा का श्रवण किया और तो और श्री परीक्षित जी का मोक्ष देखकर के भगवान ब्रह्मा भी आश्चर्यचकित हो गए हैं। सभी शास्त्रों को तुला की एक तरफ विराजमान किया है और दूसरी तरफ तुला में श्रीमद्भागवत जी को विराजमान किया गया तो सभी शास्त्रों की अपेक्षा श्रीमद्भागवत महत्वपूर्ण गौरवपूर्ण सिद्ध हुआ है।

हे शौनकदि ऋषियों! यह श्रीमद्भागवत की जो कथा है इसकी जो सप्ताह विधि है यह सर्वप्रथम सनकादि ऋषियों ने देवर्षि नारद को सुनाया था। तो शौनकादि ऋषियों ने कहा कि नारद जी तो 7 दिन टिकने की बाते दूर है वह थोड़े समय भी नहीं रूक सकते एक जगह पर तो 7 दिन उन्होंने कैसे श्रीमद्भागवत जी की कथा सुन ली? 7 दिन तक वह कथा एक जगह बैठकर के कैसे सुन लिए? उनका यह सब विधि विधान में, साप्ताहिक श्रवण में, इस प्रपंच में उनका मन कैसे लग गया?

एक बार की बात है देवर्षि नारद विशालापुरी गए हैं और विशालापुरी में सनकादि भाइयों ने देखा है कि नारदजी का चेहरा उतरा हुआ है। ऋषियों ने प्रश्न किया कि आप तो किसी संसार में फंसे हुए नहीं है फिर आप ऐसे इस तरह कैसे दिख रहे हैं जैसे किसी धनी व्यक्ति का धन चोरी हो गया हो ऐसा आपका मुख उदास कैसे हो रहा है। इतने जल्दी-जल्दी में कहाँ से आये हो और कहाँ जा रहे हो? नारदजी बोलते हैं- मैं इस पृथ्वी को सर्वोच्च मान करके पृथ्वी के तीर्थो में विचरण करने के लिए गया। मैंने पुष्कर, प्रयाग, काशी, गोदावरी, हरिद्वार, कुरुक्षेत्र सभी तीर्थो का भ्रमण किया है परंतु वहाँ कहीं भी शांति और मन के संतोष का जो कारण भक्ति होती है परमात्मा की ऐसा कुछ भी नहीं देखा है। सभी लोग कलियुग के प्रभाव में कलियुग की चपेट में आ गए हैं।

सत्यं नास्ति तपः शौचं दया दानं न विद्यते।

उदरम्भरिणो जीवा वराकाः कूटभाषिणः।।

कहीं सत्य नहीं देखा है, कहीं तप नहीं देखा, कहीं

पवित्रता नहीं देखी, कहीं दया नहीं देखी, किसी को दान करते हुए नहीं देखा। किसी तरीके से अपना पेट भर जाए यही एक ही बात सभी लोग सीख रहे हैं और सिखा रहे हैं। माता-पिता कोई अपने पुत्र को नजदीक बुला करके यह कहता है क्या कि बेटा एक बात बताओ कल्याण किससे होगा? यह जरूर बताते हैं कि यह धंधा इतने का होगा, ऐसी बातें सब बताएंगे परंतु कोई अपने पुत्र को यह नहीं बताता है कि बेटा संतों की संग करो जिससे तुम्हारा कल्याण हो। अरे महाराज जो सत्संग नहीं करता है, जो सत्य की संगत नहीं करता है, जो संतों की संगति नहीं करता है उसका तो एक सामान्य मांसभक्षी जीव भी समर्थन नहीं करते हैं।

हमारे पूज्य श्री मलूकपीठ वाले गुरुदेव जी एक कथा सुनाते हैं- एक भेड़िया और उसकी पत्नी दोनों जंगल में भ्रमण करने जाते हैं। भूख के मारे कुछ शिकार ढूंढने के लिए जाते हैं तो कहीं जाते-जाते एक जगह जंगल में जाकर के देखा कि एक मरा हुआ व्यक्ति पड़ा है। उसको खाने के लिए जैसे ही भेड़िया उद्यत होता है तो उसकी पत्नी उसको रोक देती है। बोले मत खाइए। क्यों नहीं खाऊं? बोले इस व्यक्ति ने कभी जीवन में सत्संग नहीं किया है इसलिए इसका मांस खाने योग्य नहीं है। तो बोले इसके हाथ तो खा लूँ, उसकी पत्नी बोली- नहीं-नहीं पतिदेव इसके हाथ भी खाने योग्य नहीं है, क्योंकि इसने इन हाथों से कभी दान नहीं दिया। अच्छा हाथ का मना कर दिया तो नहीं खाते, पर कान तो खा ले। नहीं कान भी नहीं खा सकते क्योंकि इसने इन कानों से कभी भगवान की कथा नहीं सुनी। तो बोले आँखें खा लें। नहीं-नहीं आँखें भी मत खाना। इन आँखों से इसने कभी साधु-संतों, गोमाता, भगवान के मंदिरों के दर्शन नहीं किये इसलिये आँखें भी मत खाओ। तो भेड़िये ने पूछा कि पैर तो खा जाऊँ। पत्नी बोली इन पैरों से कभी तीर्थ नहीं किये, इसलिये पैरों को भी मत खाओ। तो इसका सिर खा लें? इसका सिर कभी संतों के सामने, गुरुजनों के सामने, अपने से बड़ों के सामने झुका ही नहीं है, यह सिर अहंकार से भरा हुआ है, खाने योग्य नहीं है। अच्छा देवी, ये सब छोड़ो तुम कहती हो तो नहीं खाता हूँ, पेट तो खा सकता हूँ? नहीं-नहीं पतिदेव, पेट तो बिल्कुल मत खाना क्योंकि इसने जीवनभर अन्याय की कमाई से उदर भरा है। अर्थात् इसका अर्थ क्या हुआ? इसका अर्थ हुआ कि सच्ची कमाई के धन पर और उतने ही धन पर हमारा अधिकार है जितने से पेट भर जाय, तन ढ़क जाय और रहने की व्यवस्था हो जाय। उससे अधिक धन हम कमा तो सकते हैं, मगर उस पर हम अधिकार नहीं कर सकते। बाकी धन तो गोमाता की सेवा में, दीन दुखियों की सेवा में लगाना चाहिये।

हे पतिदेव, इसको छोड़ दो। यह जो शरीर है यह नीच शरीर है। अच्छी तरह से निंदा करने योग्य शरीर है। इसलिये नारदजी दु:खी हो गये कि हम सब जगह भ्रमण करके आये लेकिन कहीं कोई भक्ति नजर नहीं आई। केवल पेट भरने हेतु लगे हुए हैं।

तुलसीदास जी ने भी कहा है- माता-पिता अपने पुत्रों को पास बुलावे, उदर भरने का उद्योग सिखावे। और तो और महाराज, पति-पत्नी आपस में झगड़ रहे हैं। कन्याओं का विक्रय हो रहा है। और तो और जब मैं सब तीर्थों में गया मुझे शांति नहीं मिली तो मैं भगवान श्री कृष्ण की लीला स्थली वृन्दावन गया कि कुछ ही समय तो हुआ है भगवान इस धरा धाम को छोड़कर गये हैं तो वहाँ तो कुछ अच्छा होगा? पर वहाँ जाकर तो मैंने एक और आश्चर्य देखा- एक स्त्री है जो यमुना तट पर बैठी है, उसके पास दो बूढ़े व्यक्ति लेटे हुए हैं और चारों तरफ खड़ी खड़ी युवतियों उन्हें पंखे से हवा डाल रही है और जो स्त्री बैठी है वह दसों दिशाओं में देख रही है और इंतजार कर रही है। मुझे देखा, मुझे देखकर वह बाला बोल पड़ी ....शेष अगले अंक में

श्रुति फोटो श्री हरि कथा

दया धर्म का मूल है

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

1996 की घटना है जब मैं पिड़ावा, जिला झालावाड़ राज. में रहता था। एक दिन पिड़ावा से सांचोर आते समय टोंक जिले के देवली कस्बे में बस स्टेशन पर दो छोटे-छोटे बच्चे, एक बालक और एक बालिका को देखा जो यात्रियों से भीख मांग रहे थे। बालिका 7-8 वर्ष की और बालक 4-5 वर्ष का होगा। बालिका के तन पर फटे पुराने वस्त्र थे पर बालक एकदम दिगम्बर। मई की भयंकर गर्मी में न तन पर पहनने को कपड़े और न पांव में चप्पल। बस जब तक रुकी रही उनको ही देखता रहा। थोड़े से पैसे मिलते ही वे दोनों सीधे चाय वाले के पास गये और उन पैसों की चाय लेकर पीने लग गये। चाय समाप्त होते ही बच्चा फिर चाय पीने के लिये रोने लगा। बच्ची उसे चुप करने का प्रयास करने लगी, लेकिन वो रोये ही जा रहा था।

थोड़ी देर रुकने के बाद हमारी बस आगे बढ़ गई, लेकिन उन बच्चों के बारे में चिन्तन चलता रहा कि ये कौन होंगे, इनके मां-बाप कैसे निष्ठुर होंगे जो बच्चों का ठीक से पालन नहीं कर रहे हैं? अधिकतर मामलों में यह होता है कि माता-पिता कहीं बैठ जाते हैं और भीख मांगने हेतु बच्चों को भेज देते हैं क्योंकि बच्चों को देखकर लोग आसानी से कुछ दे देते हैं। लंकिन यहाँ तो ऐसा नहीं था, पैसे मिलते ही वे उसे खर्च कर देते। मन ही मन इन बालकों के बारे में कई विचार आने लगे, भीतर दया का अंकुर प्रष्फुटित हो रहा था।

थोड़े ही दिनों बाद फिर देवली से गुजरना हुआ। सोचने लगा कि आज वे बच्चे कैसे होंगे? बस आकर रुकी। दौड़कर वे ही बच्चे बस में चढ़े। सबसे कुछ देने का निवेदन करने लगे। थोड़े से पैसे मिले और भागकर चाय की थड़ी पर गये और चाय लेकर पीने लगे। मैं बस से उतरकर उनके पीछे गया। चाय वाले को उनके बारे में पूछा। चाय वाले ने बताया कि सालभर हुआ है इनके माता-पिता गुजर गये। इनका इस संसार में अब कोई नहीं है। ये दोनों भाई-बहन इसी हाल में यहाँ बस स्टेशन पर जीवन गुजार रहे हैं। यह बालक चाय के अलावा कुछ भी खाता-पीता नहीं है। दिनभर भीख मांगकर बच्ची इसको चाय पिलाती है।

मैं पास की दूकान पर गया, पहनने के कपड़े और चप्पल लाकर दिये, बच्चे बहुत प्रसन्न हुए और पहन लिये। वे कुछ बोल तो नहीं सके, मगर उनकी आँखें सब कुछ बोल रही थी। उन बालकों के हृदय से निकली प्रसन्नता की तरंगें मेरे हृदयमें प्रवेश कर गई और उस भावुक क्षण ने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी। कई बार जीवन भर जो करोड़ों का दान कर हम प्राप्त नहीं कर सकते, वो एक क्षण में मात्र 50 रुपये में प्राप्त हो गया। इतने से ही ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त हो गई और मेरे जीवन की धारा संसार से अध्यात्म की और मोड़ दी। इससे पहले मुझे धर्म और अध्यात्म में कोई रूची नहीं थी। बचपन में भजन बहुत गाये लेकिन उनका जीवन में कोई ऐसा असर नहीं हुआ।

मैं पिड़ावा में दिगम्बर जैन परिवार के यहाँ किराये पर रहता था, वे बहुत धार्मिक थे। उस दिन एक और संयोग हुआ। पिड़ावा पहुँचा तो हमारे मकान मालिक के घर में टेप रेकार्डर पर एक भजन चल रहा था- ''भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना, अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।'' यह भजन मेरे हृदय में प्रवेश करने लगा। मैंने उनसे टेप रेकार्डर मांग कर लिया और उस भजन को अनेकों बार सुना। जितनी बार सुना उतनी ही बार नया लगता गया और गहरा उतरता गया। वो एक प्रार्थना थी जो मेरा पिघला हुआ हृदय ईश्वर से कर

रहा था। पिघले हुए हृदय में जो भाव उतरते हैं वे स्थाई असर करते हैं।

कई बार देखने में आया कि व्यक्ति बहुत सज्जन है पर मन काम या लोभ में रचा-पचा। महाराज जी ने एक बार आज्ञा दी कि मानव सेवा संघ का साहित्य अंग्रेजी में रूपान्तरित करें। मैं एक अध्यापक जी के पास कुछ साहित्य लेकर गया और उनसे निवेदन किया तो उन्होंने कहा कि धार्मिक कार्य में अभी रूची नहीं है। उल्टा मुझे ही सलाह देने लगे कि कहीं खेती की जमीन खरीदो, आगे बहुत महंगी होगी। इन धार्मिक पुस्तकों की अभी आपकी आयु नहीं है। अभी प्रोपर्टी पर ध्यान दो। वे गुरुजी समाज में बहुत सज्जन कहलाते हैं पर सज्जनता के साथ ईश्वरीय चिन्तन नहीं, ईश्वरीय कृपा बाकी थी।

मेरे विचार से अध्यात्म और सज्जनता एकदम अलग-अलग है। अगर दया है तो व्यक्ति सज्जनता से अध्यात्म की ओर आ सकता है, लेकिन अगर दया नहीं है तो सज्जन से सज्जन व्यक्ति भी अध्यात्म से दूर रहेगा, अध्यात्मिकता की ओर नहीं आ सकता। जब ईश्वरीय कृपा होती है तो व्यक्ति संसार से धर्म-अध्यात्म की ओर मुड़ता है। कलियुग में दया एक ऐसा गुण है जो अकेला ही व्यक्ति का कल्याण कर सकता है। दूसरों के दु:ख से दु:खी होकर अगर हमारा हृदय पिघल जाता है तो समझिए हम ईश्वरीय मार्ग के निकट ही हैं। इसीलिये तो गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लगि घट में प्राण।।

दया धर्म की और अभिमान पाप की जड़ है। दान और दया दोनों में ही व्यक्ति कुछ न कुछ समर्पित करता है। लेकिन दोनों में एक अंतर है। दान में व्यक्ति सोच कर कुछ समर्पित करता है, मगर दया में समर्पण अपने आप होता है। दया में समझ नहीं, दूसरों की पीड़ा मिटाने का भाव काम करता है।

संत और शास्त्र प्राणीमात्र पर दया रखने की और पाप से बचने की शिक्षा देते हैं, क्योंकि दया जीव को हल्का करती है और पाप बहुत घनी व भारी वस्तु की तरह है, वह जीव को भारी करता है। जिस प्रकार भारी वस्तु बांधकर किसी व्यक्ति को समुन्द्र में फैंकने से वह डूब जाता है ठीक उसी प्रकार पापों से बंधा व्यक्ति संसार सागर में डूब जाता है। पाप व्यक्ति को डुबो देता है, कल्याण नहीं होने देता है। पापी व्यक्ति का हृदय कठोर होता है, उसमें दया नहीं होती है। पाप से परमात्मा की प्राप्ति बहुत दूर चली जाती है। पाप करने से ईश्वर की तरफ जाने के मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं या यों कहें कि जीव का उस तरफ जाने का मन भी नहीं होता। इसलिए पाप को अभिमान या अधर्म का मूल और दया को धर्म का मूल कहा गया है। अभिमान कल्याण के मार्ग को रोक कर खड़ा हो जाता है और दया जीव को हाथ पकड़कर उस ओर ले जाती है।

मनुष्य के कल्याण में तीन बातें विशेष सहयोगी है- दया दान और तप। इन तीनों को साकेत की सीढ़ी कह सकते हैं। ऐसे ही कल्याण के मार्ग में ये तीन बातें विशेष असहयोगी है- काम क्रोध और लोभ। इन तीनों को नरक के द्वार कहा गया है।

साधारण भाषा में समझें कि ईश्वर के वहाँ जाने के लिए हल्का होना पड़ेगा। दया दान और तप जीव को हल्का करते हैं व काम क्रोध और लोभ तीनों ही पापों को बढ़ाने वाले और जीव को भारी कर डूबोने वाले हैं। इनका इतना वजन हो जाता है कि जीव संसार से टस से मस नहीं हो सकता। ये शरीर के साथ जो आत्मा का जुड़ाव है उसको और अधिक मजबूत करते हैं। काम वासना बहुत घनी है, जीव को अपने भार से डुबो देती है, हिलने का कोई मौका नहीं देती है। भोग भोगने से चेतन आत्मा का जड़ शरीर के साथ तादात्म्य और सुदृढ़ होता है। जबकि कल्याण इन दोनों के संबंध विच्छेद से होगा।

अप्रेल माह में हुए परम् श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज के प्रवास का संक्षिप्त वृत्तांतः

7 से 10 अप्रेल तक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी महाराज श्री कामधेनु गो अभ्यारण्य सालरिया, मालवा में विराजे। यहाँ एक वर्ष तक आयोजित हुए गोकथा के उपसंहार कार्यक्रम में अपना पावन सानिध्य और कृपामय मार्गदर्शन प्रदान किया।

18 से 20 अप्रेल तक वृन्दावन का प्रवास रहा जहाँ प.पू. मलूकदास जी महाराज की 451 वी जयंति के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में देशभर से पधारे संतों, साधकों और गोभक्तों को अपने पावन सानिध्य से कृतार्थ किया।

श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया में सम्पन्न हुआ एक वर्षीय गोकथा का उपसंहार कार्यक्रम

मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित एवं श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित विश्व के प्रथम श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया में दिनांक 9 अप्रेल 2024 से 29 मार्च 2025 तक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी महाराजके पावन सानिध्य में, पूज्य ग्वालसंत श्री गोपालानंद सरस्वतीजी महाराज की पावन उपस्थिति में और देशभर के पूज्य संत महात्माओं, विप्रों के मार्गदर्शन में व गोभक्तों की उपस्थितिमें एक वर्षीय वेदलक्षणा गो आराधना महामहोत्सव का दिव्य और भव्य आयोजन किया गया। लगातार एक वर्ष तक पूज्य ग्वालसंत श्री गोपालानंदजी सरस्वती जी महारज ने मधुर वाणी में गोकथा श्रवण करवाई। एक वर्षीय कथा के मुख्य यजमान अहमदाबाद के परम् गोभक्त श्री चिमनभाई अग्रवाल रहे।

इस महामहोत्सव के समापन उपरान्त दिनांक 12 अप्रैल तक उपसंहार कार्यक्रम रखा गया। उपसंहार कार्यक्रम में परम् श्रद्धेय पथमेड़ा महाराज जी के पावन सानिध्य में देशभर से गोउपासक संत महापुरुष तथा हजारों गोभक्तों ने भाग लिया। इस अवसर पर न्यास के कार्यकारी प्रधान संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज, पू. श्री छोटे सरकार दादाजी धूणी खेड़ी घाट, पूज्य आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज संगरिया, आर्ट ऑफ लिविंग के स्वामी श्री हरिहर जी महाराज, प.पू. काशी सुमेरू पीठाध ीश्वर स्वामी श्री नरेन्द्रानंद सरस्वतीजी महाराज, पू. श्री ओमप्रकाश जी महाराज दादूधाम नरेना, पू. महामण्डलेश्वर श्री रामगोपाल दास जी महाराज पंचकुइया धाम, पू. श्री धन्वन्तरिजी महाराज वृन्दावन, पू. श्री जानकीदास जी महाराज गुजराज, पू. श्री राध ो बाबा निर्माही अखाड़ा, पू. स्वामी श्री अखिलेश्वरानंद गिरी जी महाराज पूर्व अध्यक्ष म. प्रदेश गोसंवर्धन बोर्ड, पू. संत श्री गोविन्दवल्लभदास जी महाराज, श्रीपतिधाम सिरोही, पू. ब्रह्मचारी मुकुन्दप्रकाश जी महाराज श्री गोधाम पथमेड़ा पू. चंद्रमादासजी महाराज आदि अनेकों संत महापुरुष विद्वानों ने गोभक्तों को आशीर्वचन प्रदान किये।

पू. गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज ने कहा कि यहाँ तो 30 वर्ष तक गोकथा निरन्तर चलनी चाहिये। पू. ग्वालसंत श्री गोपालानंद सरस्वती जी महाराज ने कार्यक्रम समापन पर घोषणा की कि गो अभयारण्य में 30 वर्षो तक गोकथा का क्रम जारी रहेगा, आज तो केवल एक वर्षीय गोकथा का विश्राम हो रहा है। आदरणीय पंडित श्री गंगाधर जी पाठक के आचार्यत्वमें गोपुष्टि महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

गुजरात से आये जेशिंग बापा जीव दया गांठियोल ग्रुप द्वारा की गई अद्‌भुत गोसेवा

70 सेवानिवृत और वरिष्ठ नागरिकों का एक सेवादल है जो पिछले कई वर्षो से गोशालाओं में पानी के अवाड़े (होज) बनाने की प्रेरणादाई सेवा कर रहा हैं यह दल अपने साधनों से निर्माण सामग्री और खाने-पीने का सामान साथ लेकर चलते हैं। वहाँ कुछ दिन रुककर अपने हाथों से आर.सी.सी. 20X5 फुट साईज के अवाड़ों का निर्माण करते हैं, जिसकी एक की लागत 41000 रुपये लगभग आती है। इस दल के अधिकतर सदस्यों की उम्र 60 से 80 वर्ष के बीच है। सभी मिलकर भगवन्नाम कीर्तन करते हुए कार्य करते हैं। अब तक विभिन्न गोशालाओं में 2200 से अधिक अवाड़े बना चुके हैं।

दिनांक 25 से 30 अप्रैल तक गोसेवा मुख्यालय श्री गोधाम पथमेड़ा यह दल आया। यहाँ रहकर 41 अवाड़े बनाये। इस ग्रुप द्वारा अब तक श्री महावीर हनुमान नंदीशाला गोलासन में 40, श्री ठाकुर गोसेवाश्रम पालड़ी में 25, श्री दिलीप गोसेवाश्रम विरोल में 7, श्री गोकुल गोधाम हिण्डवाड़ा में 11, श्री खेतेश्वर गोशाला आश्रम खिरोड़ी में 20, श्री अर्बुदा गोशाला आश्रम सिरोही में 9, श्री गोनंदी तीर्थ कलापुरा जालोर 16 अवाड़े बनाये गये।

दिल्ली शाखा द्वारा एक दिवसीय गोसेवा वार्षिक उत्सव मनाया गया

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की एन.सी. आर. दिल्ली शाखा द्वारा तुड़ा भण्डारण महाअभियान के निमित्त दिनांक 27 अप्रेल को दिव्य गोमहिमा कवि सम्मेलन आयोजित कर वार्षिक गोसेवा उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली के प्रबुद्ध वर्ग को दिल्ली की गोभक्ता मुख्यमंत्री महोदया श्रीमती रेखा गुप्ता द्वारा सम्बोधित किया।

माननीया मुख्यमंत्री महोदया ने कहा कि इस बात को मानती हूं कि जब तक सरकार और समाज एकजुट होकर के इस रास्ते पर नहीं आएंगे तब तक हमारी गोमाता को आश्रय नहीं मिल पाएगा। हम सबको मिलकर काम करना होगा। मैं वर्षो से इस विषय पर काम कर रही हूं और बड़ी तकलीफ होती है जब हमारा गोवंश किसी कूड़ाघर पर खड़े होकर के उस कूड़े में डाली हुई खाने की कोई वस्तु, कोई रोटी के टुकड़े को ढूंढती है। जिसमें 33 करोड़ देवी देवता बसते हैं, जो हमारे बांके बिहारी जी की प्रिया है क्या उसको हम सम्मान दे रहे हैं? सड़कों पर दुर्घटनाग्रस्त गोमाता देखकर भी बहुत दुःख होता है। हम सोचते तो बहुत कुछ हैं पर कर नहीं पाए। मुझे लगता है करने के अवसर मिले तो चाहे वह आपका गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा हो या अन्य कोई हमारी गोशाला हो, समाज पीछे नहीं हटेगा।

इस अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री ने घोषण की कि दिल्ली में सरकार एक 40 करोड़ की लागत से एक मॉडल गोशाला बनाकर चलाने के लिये दिल्ली के गोभक्तों को देगी। मैं बधाई देती हूं अपने श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा संस्थान को जिन्होंने देशभर में अनेकों गोशालाएं खोलकर निराश्रित गोमाता की सेवा कर रहे हैं। मैं दिल्ली की मुख्यमंत्री होने के नाते आपको विश्वास दिलाती हूँ कि हम कई नई गोशालाएं खोलकर दिल्ली में घूम रहे निराश्रित गोवंश को सेवा में लेकर दिल्ली को निराश्रित गोवंश से मुक्त करेंगे। इस अवसर पर दिल्ली के अनेकों गोभक्त भामाशाह उपस्थित रहे।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा निर्मित वेदलक्षणा पंचगव्यामृत

राज्य एवं शहरवार वेदलक्षणा स्टोर

राजस्थानः-आनन्दवन पथमेड़ा- 7073000148, गोलोकतीर्थ नन्दगाँव- 7073000102,
सांचोर- 9549303737। सिरोही- 9414533212, 7014020269। रेवदर- 9413464862। आबू रोड-9414769350। 9460795056
बालोतरा- 9571115151। नाथद्वारा-9413953307। गुडामालानी-8097131008 जयपुर- 9352418443, 9829050489 ,
9414113363। उदयपुर- 992918887। श्रीगंगानगर-9414502652। जोधपुर-9414145448, 9414701965, 9929751789
आमेट-8696500500। भीलवाड़ा-9413357589। चित्तोड़गढ-8764332790,9460365209 कोटा-9460847509,
9414180317,7689888999। भीनमाल-8955114669 ,9602963605,सुमेरपुर-9680263505। डिडवाना-9413188398।
पाली-9166924752,9636410019। बाड़मेर-7023512779।

गुजरातः- (मुख्य कार्यालय) वैदिक गो उत्पाद फाउण्डेशन, अहमदाबाद- 7300044444
ओढव-9898995533। निकोल-8511527846। बोडकदेव-8128363333। गुरूकुल-8469099499 । वस्त्राल -8401552613।
बोपल-9898890328 । खोखरा-9831799918। शीलज-9784603691। जगतपुर-9229929687। मणिनगर- 9376626059।
CTM- 9828803551 । डिसा-9499690985। मेहसाणा-9265179385 । राजकोट-9510321221। थरा- 9979881942 ।
टेटोड़ा- 9724325328। हिम्मतनगर- 9427364528 । सूरत- 8160203183 ,9028230690,9825161296,9636717511 ।
जामनगर- 6353804488। गांधीधाम-9825662028 । वडोदरा-96248 65108। देहगाम-91 98249 52818

महाराष्ट्रः- विलेपार्ले-9167521008। मलाड़ ईस्ट-7700037496। नालासोपारा-7875262630।
पालघर-8554883095। पुणे-9922942184। नाशिक-8999961834। सेलु-9422216123। इचलकरंजी-7558460981।

उत्तरप्रदेशः-वृंदावन-मथुरा-9988090900। गोरखपुर-9336409588। सीतापुर-8795555501,9838491708,7007089248।
आगराः-9756190459 । वाराणसी-9598702973। बरेली-9634171403। चित्रकूट-6391701302। फैजाबाद-8006722974।

दिल्लीः- पीतमपुरा- 9873745454,8800953294। न्यू दिल्ली -9811117340। सुंदर नगर -9818044612।

मध्यप्रदेशः- मालवा-सालरिया-76656 90334 । इन्दोर-9826925958 । ग्वालियर-6378130837। मंदसौर-8827420333।

वेस्ट बंगालः-कोलकाता-8335082771,9830508363 ।वेस्ट दुर्गापुर-7908004377। सिलीगुड़ी-8597253275।

हरियाणाः-गुरुग्राम-9873243553,8800210272। रेवाड़ी-9728717373 । **पंजाबः**-अबोहर-9464911162।
मोहाली- 9888476785। **आंध्रप्रदेशः**- विशाखापट्नम-9440480037 । चिराला-8019998770।
आसामः- जोरहट 7002959522 । गुहाटी-7002267423 । **छत्तीसगढ़ः**-रायपुर-7000891685 । दुर्ग-9425510729 ।
कर्नाटकाः-बैंगलोर-8094565460,9886312521। **ओडिशाः**- भुवनेश्वर-7609823272,9090009203। पूरी-9437365977।
तमिलनाडुः-इरोड-9843035554 । **तेलंगानाः**-हैदराबाद- 88855 21008 ।

Head Office
Vedik Go Utpad Foundation
Shree Surbhi Shaktipeeth
Sabarmati Tat,Near, Bhat Toll,S.P Ring Road,
Gandhinagar, Gujarat- 382428
Contact & Whatsapp: +91 73000 44444
www.vedlakshana.com info@vedlakshana.com

Follow us on: Vedlakshana official

प्रकाशन तिथी : 01 मई 2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए
RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No : RJ/SRO/9681/2025-2027

गोसेवार्थ सहयोग के प्रकार

1. एक गोमाता को गोद लेकर परिवार का सदस्य बनायें प्रतिवर्ष — रु 21000
2. आओ हरा घास चारा अर्पित करें प्रति गाड़ी — रु 31000
3. आइये सूखे घास चारे की सेवा करें प्रति गाड़ी — रु 1,01,000
4. गोमाता की सेवा में अक्षय भूदान समर्पित करें प्रति बीघा — रु 2,51,000
5. जीवन के साथ भी-जीवन के बाद भी आजीवन गोसेवक बनें प्रति गोवंश — रु 2,51,000
6. गुड़ की एक गाड़ी गोमाता को परोसें सेवा राशि — रु 4,51,000
7. अशक्त गोवंश हेतु पौष्टिक आहार की प्रति गाड़ी सेवा राशि — रु 5,00,000
8. बीमार गोवंश का उपचार करें मासिक सेवा राशि — रु 11,00,000
9. गोधाम द्वारा सेवित गोवंश सेवार्थ एक दिन का पौष्टिक आहार, हरा-सूखा घास चारा अर्पित करें सेवा राशि — रु 35,00,000

NAME - SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
BANK OF BARODA A/C - 08490100023827 | IFSC - BARB0ASHRAM (FIFTH CHARACTOR IS ZERO)
Branch : Ashram Road, Ahmedabad, Mob: 77420 93179, 76650 59999, 70730 00151